जंगल की कहानी



जैक लंडन के प्रसिद्ध उपन्यास 'काल आफ दि वाइल्ड'
का सरल रूपान्तर

जंगल की कहानी

जैक लंडन के उपन्यास 'कॉल ऑफ दि वाइल्ड'
का सरल हिन्दी रूपान्तर



रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास

ISBN : 978-81-7483-035-7

JUNGLE KI KAHANI (Abridged Hindi Edition of
Call of The Wild) by Jack London

शिक्षा भारती
मदरसा रोड, कश्मीरी गेट-दिल्ली-110006

जंगल की कहानी





जंगल की कहानी

एक कुत्ता था। उसका नाम था बक। लम्बा-चौड़ा, बहादुर, और शानदार कुत्ता। देखने में इतना खूबसूरत कि बस देखते ही रहो। लेकिन अनजान आदमी उसके पास आने की हिम्मत भी नहीं कर सकता था।

बक उत्तरी अमरीका के कैलीफोर्निया प्रदेश की एक सुन्दर घाटी में बसे एक छोटे नगर में रहता था। नगर के बाहर ही जज मिलर का बड़ा बंगला था। उसके आसपास काफी बड़ा बाग था और चिनार के लम्बे-लम्बे पेड़ों से वह बाग घिरा हुआ था। बंगले के पिछवाड़े जज साहब के घोड़ों की घुड़साल थी और नौकरों के घर थे। कुएँ से पानी खींचने की मशीन थी और सीमेंट का बना एक काफी बड़ा तालाब था, जिसमें जज साहब के बच्चे कूद-कूदकर नहाते थे। इतनी बड़ी जागीर पर बक का राज था।

जज साहब के घर में और भी बहुत-से कुत्ते थे। छोटे-छोटे खिलौने जैसे कुत्ते और बड़े-बड़े डरावने शिकारी कुत्ते। कुत्तों की एक पूरी फौज जज साहब ने पाल रखी थी। लेकिन बक तो जैसे इन सभी कुत्तों का राजा था। वह न तो कुत्तों से डरता था और न आदमियों से। जब मन में आता था तब वह तालाब में कूद जाता था और पानी में तैरता रहता था।

जज साहब के लड़के जब शिकार पर जाते तो बक सबसे आगे-आगे चलता। जब शाम को जज साहब की लड़कियाँ, माली और ऐलिस सैर करने जातीं तो बक उनके साथ होता। रात को जब जज साहब अंगीठी के पास बैठकर पुस्तक पढ़ते तो बक उनके पैरों में लेटा रहता। जज साहब के पोतों को वह पीठ पर घुमाता और उन्हें घास में लुढ़का देता था। इस तरह सारे बंगले पर बक का राज था।

जज साहब के बाग में मैनुअल नाम का एक माली था। वह अच्छा आदमी नहीं था। वह दिन-भर काम करने के बहाने झाड़ियों के पीछे छिपकर ऊँघता रहता था और रात में शहर

की बदनाम जगहों में जाकर जुआ खेलता था। जुए में वह अक्सर हार जाता था और अपना सारा पैसा गँवा बैठता था। एक बार जुए में हारने पर जब उसके पास पैसे नहीं बचे तो उसने चोरी से बक को बेच देने की तैयारी की।

उस रात जज साहब किसी सभा में भाग लेने गए थे। घर के नौकर-चाकर अपने-अपने काम में लगे थे। माली किसी बहाने बक को बंगले से बाहर निकाल लाया। बक खुशी-खुशी उसके साथ चलता रहा। माली इधर-उधर गलियों में घुमाता हुआ उसे स्टेशन के पास ले आया।

वहाँ एक अजनबी आदमी उनका इन्तजार कर रहा था। बक ने देखा कि उस आदमी ने माली को कुछ रुपए दिए। रुपए लेकर माली बक के गले में एक मजबूत रस्सी बाँधने लगा। बक को बड़ा आश्चर्य हुआ। आज तक किसी ने उसके गले में रस्सी नहीं बाँधी थी। वह हमेशा आजाद रहता था। जब माली ने रस्सी उस आदमी के हाथ में थमाई तो बक को यह बड़ा बुरा लगा। वह गुर्राने लगा। उस आदमी को घबराते हुए देखकर माली ने उससे कहा, “इसे कुत्ते को तुम इस तरह आसानी से नहीं ले जा सकोगे। ज़रा रस्सी को ऐंठो! इससे इसका दम घुटने लगेगा और अक्ल ठिकाने आ जाएगी।”

उस आदमी ने ऐसा ही किया। बक गुस्से में भरकर उसको काटने के लिए उछला। उसने रस्सी को और जोर से कसा और एक झटका देकर बक को पीठ के बल जमीन पर फेंक दिया। बक के लिए यह नया अनुभव था। आज तक किसी ने उसको इस तरह सताने की हिम्मत नहीं की थी। इतने में उसने देखा कि माली चुपचाप वहाँ से चला गया।

अब उसकी समझ में आया कि माली ने उसके साथ धोखा किया था। लेकिन अब वह कर ही क्या सकता था! इतने में उस अजनबी आदमी के दो-तीन और साथी वहाँ आ पहुँचे। सबने मिलकर बक को अच्छी तरह से बाँध दिया। थोड़ी देर में एक मालगाड़ी आई। उन लोगों ने बक को उठाकर एक डिब्बे में फेंक दिया और बाहर से दरवाजा बन्द कर दिया। गाड़ी चल पड़ी।

बक डिब्बे में पड़ा हुआ था। उसकी साँस फूल रही थी और जीभ मुँह से बाहर लटक आई थी। वह लगातार भौंक रहा था। चीखते-चीखते उसका गला फट गया। लेकिन कोई उसकी मदद को नहीं आया। उसे बहुत जोर की प्यास लगी थी। उसे बार-बार जज साहब का घर याद आ रहा था। दुख के मारे उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

सुबह गाड़ी एक अजनबी स्टेशन पर रुकी तो कुछ लोगों ने मिलकर बक को डिब्बे से बाहर घसीट लिया और जमीन पर पटक दिया। बक पूरी तरह ताकत लगाकर उछला और रस्सी से अपने को छुड़ाने की कोशिश करने लगा। लेकिन उन लोगों ने उसे पीटकर लकड़ी के एक छोटे-से पिंजरे में ठूँस दिया। फिर इस पिंजरे को उन्होंने एक घोड़ागाड़ी पर लाद दिया।

थोड़ी ही देर में घोड़ागाड़ी एक बड़े-से अहाते के फाटक के सामने रुकी। टीन का फाटक खड़खड़ाकर खुला और बक का पिंजरा उतारकर अहाते के अन्दर पहुँचा दिया गया। घोड़ा-गाड़ी चली गई और फाटक बन्द हो गया। चार आदमियों ने पिंजरे को खींचकर अहाते के

बीच में रख दिया। बक की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह जोर-जोर से भौंक रहा था और पिंजरे की लकड़ी को अपने मजबूत दाँतों से काटने की कोशिश कर रहा था।

इतने में लाल स्वेटर पहने एक मोटा-तगड़ा आदमी पिंजरे के पास आया और बक को ध्यान से देखने लगा। बक भी उसे घूरने लगा। उसने तय कर लिया कि पिंजरे का दरवाजा खुलते ही वह उस आदमी की बोटी-बोटी नोच डालेगा। इतने में एक लड़के ने उससे पूछा, “तुम इसे इसी समय बाहर निकालोगे?”

लाल स्वेटर वाला आदमी बोला, “हाँ, बिलकुल अभी। ज़रा मैं इससे दोस्ती करना चाहता हूँ।” यह कहकर वह धीमे-से मुस्कराया और एक कुल्हाड़ी और डंडा ले आया। बाकी के सभी आदमी वहाँ से दूर हट गए और अहाते की दीवार पर इधर-उधर बैठकर तमाशा देखने लगे।

लाल स्वेटर वाले आदमी ने कुल्हाड़ी से पिंजरे की दो-तीन लकड़ियाँ तोड़ दीं और बक के बाहर निकलने के लिए काफी रास्ता बना दिया। फिर वह कुछ पीछे हटकर बोला, “आ, बाहर निकल आ! मेरे भूखे शेर!” फिर उसने कुल्हाड़ी फेंक दी और डंडा अपने दाहिने हाथ में ले लिया।



बक दहाड़ता हुआ बाहर निकल आया। अब उसे अपने सताने वालों से निपटने का मौका मिला था। वह बहुत गुस्से में था। एक छलाँग लगाकर वह उस आदमी पर झपटा। लेकिन वह आदमी भी इस तरह की लड़ाई में होशियार था। उसने बचते हुए बक के जबड़े पर एक डंडा जमा दिया। बक चोट से बिलबिला उठा और दूने गुस्से के साथ उसकी ओर झपटा। इस बार भी डंडा उसके मुँह पर पड़ा और वह पीठ के बल जमीन पर आ गिरा।

दीवार पर बैठे हुए लोग तालियाँ बजाकर हँसने लगे।

बक को चोट से उतना दु:ख नहीं हो रहा था, जितना इस अपमान से हो रहा था। अपनी चार साल की जिन्दगी में उसे याद नहीं आ रहा था, आज तक कभी किसी ने उसे इस तरह पीटने या उसपर हँसने की कोशिश की हो। वह फिर झुँझलाकर उठा और तीर की तरह उस आदमी की ओर बढ़ा। लेकिन इस बार भी वह उस आदमी का कुछ नहीं बिगाड़ सका और उसकी नाक डंडे के बार से झनझना उठी। उसके मुँह से खून निकलने लगा।

अब बक समझ गया कि इस डंडाधारी आदमी के सामने उसकी एक नहीं चलेगी। डंडे की मार से अब उसमें उठने की हिम्मत भी नहीं रह गई थी। वह वहीं जमीन पर पड़ा-पड़ा अपने उस सताने वाले को देखता रहा।

उस आदमी ने भी अब डंडा फेंक दिया। पास आते हुए वह बोला, “कहो प्यारे बक! यही नाम है ना तुम्हारा? हाँ तो बक, क्या हाल हैं तुम्हारे? चलो, अब झगड़ा यहीं खत्म कर दिया जाए। तुमने अपनी जगह जान ली और मैं अपनी जानता हूँ। अच्छे कुत्ते बनोगे तो सब ठीक-ठाक चलेगा। तुम आराम से रह सकोगे।” फिर वह बक की ओर उंगली हिलाते हुए और धमकाते हुए बोला, “लेकिन याद रखो—अगर तुम खराब कुत्ते बनोगे तो मैं तुम्हारी जान ले लूंगा। समझे?”

फिर पास आकर वह बक के सिर को थपथपाने लगा। उसी सिर को, जिसपर अभी-अभी उसने कस-कसकर डण्डे मारे थे। उसके छूते ही मारे डर के बक के रोंगटे खड़े हो जाते थे। फिर वह आदमी उसके लिए पानी लाया। बक जल्दी-जल्दी चाटकर सारा पानी पी गया। उसका सारा शरीर दर्द कर रहा था, लेकिन वह किसी तरह लंगड़ाता हुआ खड़ा हो गया और जब उस आदमी ने उसके सामने कच्चे मांस का टुकड़ा फेंका तो वह जल्दी-जल्दी चबाता हुआ उसे खा गया।

इसके बाद वह आदमी बक को उसी अहाते में एक जगह ले गया, जहाँ बहुत-से जालीदार पिंजरे बने हुए थे। हर पिंजरे में एक कुत्ता बन्द था। जब बक वहाँ पहुँचा तो सभी कुत्ते उसे देखकर भौंकने लगे। बक ने बेपरवाही से उनकी ओर देखा और फिर अपना मुँह फेर लिया। अपने मन में उसने कहा, ‘पिंजरे से बाहर निकलो तो इस तरह भौंकने का मजा मैं तुम्हें चखा सकता हूँ!’

लाल स्वेटर वाला आदमी बक को एक पिंजरे में बन्द करके चला गया। अब यही बक का घर था।

बक देखता था कि रोज तरह-तरह के अजनबी लोग वहाँ आते थे और उस लाल स्वेटर वाले आदमी के साथ पिंजरे में बन्द कुत्तों की ओर इशारा करके कुछ बातें करते थे। इसके बाद वे कोई कुत्ता पसन्द कर लेते थे और पैसे देकर उसे अपने साथ ले जाते थे। कभी-कभी कोई ग्राहक एक साथ कई कुत्ते खरीद ले जाता था। बक अपने पिंजरे में बैठा आश्चर्य करता था कि इन लोगों के साथ कुत्ते कहाँ चले जाते हैं और फिर वे क्यों कभी वापस नहीं लौटते। उसे अपने बारे में भी चिन्ता होती थी। हर बार उसे खुशी होती थी कि उसको नहीं चुना गया।

लेकिन अन्त में उसकी भी बारी आ गई। एक दिन नाटे कद का एक दुबला-पतला

आदमी आया। वह टूटी-फूटी अंग्रेजी बोलता था और बड़े अजीब-अजीब ढंग से इशारे करता हुआ बात करता था। उसने देखते ही बक हो पसन्द कर लिया। फिर उसने बक के पड़ोस में रहने वाली एक कुतिया को भी खरीद लिया। बक की यह पड़ोसिन अच्छे स्वभाव की कुतिया थी। बक से उसकी थोड़ी-थोड़ी दोस्ती भी हो गई थी और बक को मालूम हो गया था कि उसका नाम कर्ली है। बक को यह भी मालूम करते देर नहीं लगी कि उसके नए मालिक का नाम पिराल्ट है।

पिराल्ट दोनों कुत्तों को लेकर बंदरगाह पर पहुँचा। बक ने देखा, वहाँ एक बड़ा-सा जहाज खड़ा था। सब लोग जहाज पर चढ़ गए। पिराल्ट उन दोनों को लेकर जहाज के निचले हिस्से में पहुँचा।

वहाँ एक बड़े-से कमरे में और भी दो-तीन कुत्ते बैठे हुए थे। एक मोटा-तगड़ा आदमी हाथ में कोड़ा लेकर खड़ा उन्हें खाना खिला रहा था। पिराल्ट ने अपने कुत्ते उस आदमी के हवाले कर दिए और फिर वह ऊपर जहाज की डेक पर चला गया। उस चौकीदार का नाम फ्रांकोइस था। फ्रांकोइस ने बक और कर्ली को कमरे के एक कोने में ला बिठाया।

बक को थोड़ी ही देर में मालूम हो गया कि उसके दूसरे साथी किस स्वभाव के हैं। जब उसे खाना दिया गया तो एक बड़ा-सा और बर्फ की तरह बिलकुल सफेद कुत्ता झपटकर उसका थोड़ा-सा खाना छीन ले गया। इस कुत्ते का नाम था—स्पिट्ज। बक उसे सजा देने के लिए झपटा। लेकिन इतने में फ्रांकोइस का कोड़ा हवा में सनसनाता हुआ स्पिट्ज पर पड़ा और इस तरह बक को अपना खाना वापस मिल गया।

कमरे में डब नाम का एक दूसरा मोटा-तगड़ा कुत्ता भी था। लेकिन वह चुपचाप अपनी जगह पर बैठा रहता था। पता नहीं क्यों, वह बहुत उदास था। किसी से भी दोस्ती नहीं करना चाहता था। वह दिन-भर या तो खाता रहता था, या अपनी जगह पर बैठा-बैठा ऊँघता रहता था। बक और कर्ली ने एक-दो बार उससे दोस्ती करने की कोशिश की, लेकिन हर बार नाराज होकर वह गुर्राने लगता था।

कई दिनों तक जहाज चलता रहा। जहाज के हिलने-डूलने से बक को बड़ा अजीब-सा लगता था। कभी-कभी सभी कुत्तों को जहाज की ऊपरी डेक पर घुमाने के लिए ले जाया जाता था। तब चारों ओर दूर तक फैले हुए समुद्र को देखकर बक को चक्कर आने लगता था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसे और उसके साथियों को कहाँ ले जाया जा रहा है।

लेकिन अगर बक कुत्ता न होकर आदमी होता तो उसे यह आसानी से मालूम हो सकता कि उन दिनों अमरीका के उस इलाके में ऐसे अच्छे मोटे-ताजे कुत्तों की माँग बहुत बढ़ गई थी जो बर्फ पर चलने वाली स्लेज गाड़ियों में जोते जा सकते थे। उन दिनों यह खबर जोरों पर फैली थी कि उत्तरी ध्रुव के आसपास के इलाकों में सोने की खानें हैं। सोने की खोज में बहुत से लोग उस बर्फीले इलाके में कुत्तागाड़ी में इधर-उधर घूमते रहते थे।

इन लोगों ने बर्फीले इलाकों में ही जगह-जगह अपनी छोटी-छोटी बस्तियाँ बसा रखी थीं। सरकार को भी इनकी देखभाल के लिए, इनकी चिट्ठियाँ लाने-ले जाने के लिए अपने कुछ

आदमी रखने पड़े थे जो कुत्तागाड़ियों में डाक के थैले पहुँचाया करते थे। पिराल्ट ऐसा ही सरकारी कर्मचारी था। वह बर्फीले इलाकों में डाक पहुँचाने का काम करता था। उसने बक और कर्ली को अपनी कुत्तागाड़ी में जोतने के लिए खरीद था।

जहाज बराबर आगे बढ़ रहा था। बक ने महसूस किया कि अब मौसम दिनों-दिन ठण्डा होता जा रहा था। ऐसी ठण्ड उसने जज साहब के घर में कभी महसूस नहीं की थी। इस तेज ठण्ड का कारण भी उसे एक दिन तब मालूम हो गया जब जहाज एक जगह पर रुका और सभी कुत्तों को जहाज से नीचे उतारा गया।

ठण्डी जमीन पर पहला कदम रखते ही बक के पैर वहाँ कीचड़ जैसी फैली एक बहुत सफेद चीज में धँस गए। वह गुर्राकर पीछे की ओर हटा। यह सफेद चीज आसमान से भी बराबर गिर रही थी। उसने अपने को झटककर साफ किया, लेकिन वह और अधिक उस पर आ गिरी। बक की समझ में नहीं आया कि वह क्या है। जब उसने जीभ से थोड़ा-सा चखा तो उसकी जबान ऐंठकर रह गई और थोड़ी ही देर में वह चीज उसके मुँह में गायब हो गई। बक इससे चक्कर में पड़ गया और देखने वाले खिल-खिलाकर हँस पड़े। बक को बड़ा बुरा महसूस हुआ, लेकिन उसकी समझ में कुछ नहीं आया, क्योंकि अपनी जिन्दगी में उसने पहली बार यह बर्फ देखी थी।



2

बर्फीले समुद्र-तट पर बक का पहला दिन बड़ा बुरा रहा। यहाँ सब कुछ नया-नया और अजीब-सा था। उसने ऐसी जिन्दगी की कल्पना नहीं की थी। न यहाँ के आदमी ऐसे आदमियों की तरह थे, जिन्हें बक अब तक देखता आया था। उनके कपड़े-लत्ते और पहनने-ओढ़ने के ढंग बिलकुल निराले थे। मोटे-मोटे ऊनी और बालदार लबादों और भद्दे-से कनटोपों में लोग दूर से भालू जैसे लगते थे। उनकी बोली और बातचीत का ढंग ही निराला था। समुद्र तट पर हरदम एक हंगामा मचा रहता था। लोगों का आना-जाना, जोर-जोर से बोलना और झगड़ा करना, यह सब कुछ बक को बड़ा विचित्र-सा लगता था।

यहाँ के कुत्ते तो सब के सब जैसे जंगली थे। हमेशा आपस में लड़ते रहते थे। बक ने ऐसे मोटे-ताजे भेड़िए जैसे कुत्ते पहले बहुत कम देखे थे। वे लड़ते क्या थे जैसे एक-दूसरे को फाड़कर खा जाना चाहते थे। और, बक को जल्दी ही मालूम हो गया कि सचमुच वे लड़ाई में अपने से कमजोर कुत्तों को मार ही डालते थे।

हुआ यह कि बक की साथिन कर्ली अपने अच्छे स्वभाव के कारण हर एक कुत्ते से आगे बढ़कर दोस्ती करती थी। वहाँ भी उसने ऐसा ही करना चाहा। सब लोग लट्ठों की एक टाल के पास ठहरे थे। कर्ली एक एस्किमो कुत्ते की ओर मुड़ी। यह कुत्ता बड़ा मोटा-तगड़ा भेड़िए जैसा था। कर्ली भी वैसे कमजोर नहीं थी। अगर ढंग से लड़ाई होती तो शायद कर्ली जीत जाती, लेकिन इस इलाके के कुत्तों का लड़ने का ढंग ही कुछ अलग था। कर्ली अभी कुछ ही आगे बढ़ी होगी कि वह दुष्ट बिजली की तरह उछलकर आगे बढ़ा और अपने तेज दाँतों से कर्ली की आँख के पास का मांस फाड़कर तुरन्त पीछे हट गया। लड़ाई का यह तरीका भेड़िए का तरीका था—चोट करना और कूदकर भाग जाना!

बात यहीं खत्म नहीं हुई। देखते-देखते तीस या चालीस एस्किमो कुत्ते वहाँ दौड़ आए। उन्होंने चुपचाप एक घेरा-सा बना लिया और लड़ाई देखने लगे। बक ने देखा कि वे सब सिर्फ तमाशा देखना चाहते थे। लड़ाई में भाग लेना नहीं चाहते थे। ऐसी लड़ाई बक के लिए बिलकुल नई थी। उसके अपने इलाके में तो जहाँ दो कुत्तों की लड़ाई होती थी देखा था कि कुछ क्षणों में वह लड़ाई कुत्तों के दल में बदल जाती थी। यहाँ सब कुत्ते घेरा बाँधकर खड़े थे और अपने होंठ चाट रहे थे। कर्ली ने पैंतरा बदलकर अपने विरोधी पर हमला किया। वह बार बचा गया और फिर धोखे से उछलकर दोबारा कर्ली के मुँह को काट गया।

दूसरी बार जब कर्ली ने उस पर हमला किया तो उसने एक खास ढंग से अपनी छाती से

उसे ऐसे रोका कि कर्ली के पैर उखड़ गए और वह लुढ़ककर जमीन पर आ गिरी। तमाशा देखने वाले ऐस्किमो कुत्ते शायद इसी बात का इन्तजार कर रहे थे। कर्ली के गिरते ही सब के सब गुर्राते और भौंकते हुए उस पर टूट पड़े और देखते-देखते उन्होंने उसकी चटनी बना डाली।



यह इस तरह अचानक हुआ कि बक की समझ में कुछ नहीं आया। उसने देखा कि जहाज पर उसका दूसरा साथी स्पिट्ज अपनी लाल जीभ निकाले एक तरफ चुपचाप इस तरह खड़ा था जैसे हँस रहा हो। बक कर्ली को बचाने के लिए लड़ाई में कूदना ही चाहता था कि इतने में फ्रांकोइस एक कुल्हाड़ी तानता हुआ कुत्तों की उस भीड़ में कूद गया। डंडे लिए हुए तीन आदमी कुत्तों को भगाने में उसकी मदद कर रहे थे। इसमें ज्यादा देर नहीं लगी। उन्होंने दो मिनट के भीतर ही कुत्तों को वहाँ से भगा दिया। लेकिन कर्ली तो वहाँ खून में सनी

और पैरों से कुचली बर्फ में पड़ी थी। कुत्तों ने नोच-नोचकर उसके टुकड़े कर डाले थे।

कर्ली की इस दर्दनाक मौत का बक के मन पर बड़ा बुरा असर पड़ा लेकिन साथ ही उसने एक पाठ सीख लिया। उसने तय किया कि वह एस्किमो कुत्तों से बचने की कोशिश करेगा। और अगर लड़ाई हुई तो वह सबसे पहले बढ़कर बार करेगा। कम से कम इतना ख्याल जरूर रखेगा कि कभी जमीन पर न गिरे, वरना उसकी भी ऐसी गति होगी। स्पिट्ज ने कर्ली को बचाने की कोई कोशिश नहीं की थी, इसे भी बक नहीं भूला। उल्टा वह जीभ निकालकर हँस रहा था। इस कारण बक अब उससे घृणा करने लगा।

बक को यहाँ एक और नया अनुभव हुआ। फ्रांकोइस ने उसको पेटियों और बकसूओं का एक फँदा पहनाया, फिर उसे एक बर्फगाड़ी में जोत दिया गया। मारे दुःख और अपमान के बक का मन भर आया। उसने सोचा कि क्या यहाँ मुझे घोड़ों की तरह गाड़ी खींचनी पड़ेगी! बक एक भी पैर आगे बढ़ाने के लिए तैयार न था। लेकिन तभी फ्रांकोइस का कोड़ा हवा में सनसना उठा। बक के आगे स्पिट्ज जुता था और उसके पीछे डब नाम का वह कुत्ता था जो जहाज में दिनभर उदास बैठा रहता था। शायद स्पिट्ज को गाड़ी खींचने का अभ्यास था क्योंकि हुक्म मिलते ही उसने जोर लगाना शुरू कर दिया। साथ ही पीछे से डब ने भी गुर्राकर धक्का दिया। मजबूर होकर बक को भी आगे बढ़ना पड़ा। थोड़ी देर में बक गाड़ी को खींचना सीख गया।

फ्रांकोइस कुछ समय बाद जंगल से लकड़ी काटकर और अपनी कुत्तागाड़ी पर उसे लादकर वापस लौट आया। पिराल्ट से उसने कहा, “ये तीनों बड़े अच्छे कुत्ते हैं। मैं इन्हें जल्दी ही सिखा लूँगा। यह बक तो बहुत बढ़िया खींचता है।”

पिराल्ट डाक वगैरह लेकर जाने की जल्दी में था। उसने मुस्कराकर बक का सिर थपथपाया और वहाँ से चल पड़ा। शाम को जब वह लौटा तो तीन-चार और नए कुत्ते साथ ले आया। उस रात बक के सामने सोने की बड़ी भारी समस्या पैदा हो गई। जब अँधेरा होने पर वह मोमबत्ती के सहारे जगमगाते तम्बू में घुसा तो पिराल्ट और फ्रांकोइस ने इसे गालियाँ देकर वहाँ से भगा दिया। और दूसरे कुत्ते खुले में ही अपने-अपने सोने के ठिकाने खोज रहे थे। बक को अपनी गलती मालूम हो गई। वह भी कोई जगह ढूँढ़ने लगा। लेकिन उसे कोई जगह नहीं मिल सकी। वह बर्फ पर ही लेट गया और सोने की कोशिश करने लगा।

लेकिन ठण्ड के मारे उसे नींद नहीं आई। वह परेशान होता हुआ कितने ही तम्बुओं में घूमता फिरा, लेकिन किसी ने उसे अन्दर जगह नहीं दी। यहाँ-वहाँ जंगली कुत्ते भी उस पर झपटे। अंत में वह यह पता लगाने लगा कि उसके दूसरे साथियों ने अपने लिए क्या इन्तजाम किया है। ठंड में ठिठुरता हुआ वह इधर-उधर चक्कर लगाने लगा। अचानक एक जगह उसके अगले पैरों के नीचे बर्फ धँस गई और नीचे से कोई चीज कुनमुनाने लगी। थोड़ी ही देर में मालूम हो गया कि कोई कुत्ता बर्फ के नीचे घर बनाकर सोने की तैयारी कर रहा है। वह कुत्ता शायद अच्छे स्वभाव का था। इसलिए उसने बक का अधिक विरोध नहीं किया और उसे भी उसने पास लेटने की जगह दे दी। इस तरह बर्फ में गुड़ी-मुड़ी होकर सोने का बक के लिए पहला मौका था। पहले तो बहुत देर तक उसे नींद ही नहीं आई और बारम्बार वह चौंक

जाता था। लेकिन फिर वह गहरी नींद में सो गया और जज साहब के घर के सपने देखता रहा।

दूसरे दिन सुबह होते ही सभी कुत्तों को फ्रांकोइस ने आवाज लगाकर जगाया। जिसने उठने में देर की उसे तुरन्त सजा मिली। देखते-देखते सभी कुत्ते फिर से गाड़ियों के पास इकट्ठे हो गए।

गाड़ियों पर पहले ही सामान लादा जा चुका था। बक के दल में कुल नौ कुत्ते हो गए थे। उन सबको एक बड़ी गाड़ी में जोत दिया गया। गाड़ियाँ चल पड़ीं। पिराल्ट गाड़ी के पीछे-पीछे चला और फ्रांकोइस अपना कोड़ा फटकारता हुआ कुत्तों को हाँकने लगा। अगले पड़ाव तक की यात्रा बड़ी कठिन थी। बर्फीली घाटी में उन्हें पूरे दिन का रास्ता तय करना था। बीच में कई छोटे-छोटे खेमे पड़े, जहाँ थोड़ी देर सुस्ताने के बाद वे लोग आगे बढ़ जाते थे। कई जगह उन्हें बर्फीली नदियाँ पार करनी पड़ीं। रास्ते में कुछ झीलें पड़ीं, जो ठण्डे ज्वालामुखियों के मुँह में बर्फ भर जाने से बनी थीं। काफी रात गए वे लोग एक बड़ी बस्ती में पहुँचे। वहाँ बहुत-से खोजयात्री आकर ठहरे हुए थे। वे उन दिनों के लिए नावें बना रहे थे जब बर्फ पिघल जाएगी और वे नदियों और नालों के जरिए आगे बढ़ सकेंगे।

इस बस्ती में रात बिताने के बाद सुबह ही वे लोग फिर अपनी यात्रा पर आगे बढ़ चले। उस दिन वे लोग चालीस मील चले क्योंकि रास्ता साफ था। लेकिन अगले दिन, और आगे भी कितने ही दिन, उन्हें बर्फ में अपना रास्ता खुद बनाना पड़ा। उन्हें बहुत कड़ी मेहनत करनी पड़ी। पिराल्ट यहाँ के सभी रास्ते पहचानता था। उसे मालूम था कि बर्फ की तह कहाँ कितनी मोटी है। अपनी गाड़ी को वह उधर से ही ले जाता।

इस तरह दिन पर दिन बीतते चले गए। हमेशा अँधेरा रहते ही वे तम्बू उखाड़ लेते और जब सूरज उगता था तो बर्फगाड़ी तेजी से दौड़ती हुई नजर आती थी। शाम को भी अँधेरा होने पर ही वे गाड़ी रोकते थे और कहीं भी बर्फ से तम्बू तान देते थे। कुत्तों को डिब्बों में से निकालकर मछलियाँ खाने को दे दी जाती थीं और लोग तम्बू में आग जलाकर सोने की तैयारी करते थे।

बक को यह जिन्दगी बिल्कुल पसन्द नहीं थी। लेकिन अब वह धीरे-धीरे इसका आदी हो चला था। उसकी तन्दुरुस्ती भी पहले से ज्यादा ठीक थी। उसे एक बात की शिकायत बराबर बनी रहती थी कि उसे यहाँ खाने को बहुत कम मिलता था। दिन-रात मेहनत करने के कारण उसे भूख बहुत ज्यादा लगती थी। पहले चोरी करने की उसकी आदत नहीं थी लेकिन अब वह बहुत चालाक हो गया था और पिराल्ट या फ्रांकोइस की नजर बचाकर खाने की कोई न कोई चीज उड़ा लिया करता था। दूसरे कुत्ते भी मौका मिलने पर ऐसी हरकतों से बाज नहीं आते थे। लेकिन वे अक्सर पकड़े जाते थे और उनकी खूब पिटाई होती थी। बक चोरी की कला में खासा उस्ताद हो गया था। कई बार तो ऐसा हुआ था कि चोरी वह करता था और पकड़ा कोई और कुत्ता जाता था।

जज साहब के माली ने जिस दिन उसे धोखा दिया था, उस दिन से लेकर अब तक उस पर बहुत कुछ बीत चुका था। उसे अपनी बहुत-सी पुरानी आदतें बदलने के लिए मजबूर

होना पड़ा था। वह पहले एक सभ्य कुत्ता था। अच्छे घर में जन्मा और बड़ा हुआ था। उसकी आदतें आम कुत्तों जैसी नहीं थीं। वह कभी भी गलीं-मुहल्लों के कुत्तों की तरह न तो गन्दी चीजों में मुँह डालता था और न फिजूल की लड़ाई-भिड़ाई का बड़ा ख्याल रहता था। कोई उसका अपमान कर देता था तो उसे बहुत बुरा लगता था।

लेकिन अब वह काफी बदल गया था। अब उसके अन्दर छिपा हुआ उसका जंगलीपन काफी उभर आया था। इतना होने पर भी वह दूसरे कुत्तों की तरह बिलकुल जंगली नहीं बना था। अब भी उसमें कई गुण ऐसे थे जो उसके नए मालिकों को बहुत पसन्द थे। पिराल्ट तो अब उससे प्यार करने लगा था। अगर कोई कुत्ता बक को छेड़ने की कोशिश करता तो पिराल्ट आगे बढ़कर उसकी मरम्मत कर देता था। बक ने नए ढंग से लड़ाई भी सीख ली थी। अब कोई भी एस्किमो कुत्ता उससे लड़ने की हिम्मत नहीं करता था।

दिन-भर कड़ी मेहनत के बाद जब शाम को खाना खाने के बाद सब कुत्ते खाली होते थे और मीलों दूर तक बर्फ पर चाँदनी फैली होती थी तो बक अपने साथियों के साथ पेड़ों की छाया में आँख-मिचौनी खेला करता था। उसके साथी कुत्ते अब उसका रोब मानने लगे थे। फिर भी अभी उसके दल में दो-तीन कुत्ते ऐसे थे जो उसकी परवाह नहीं करते थे और स्पिट्ज कई बार बिना किसी कारण के ही उससे लड़ पड़ता था। बक ऐसे कुत्तों से ज़रा दूर रहने की कोशिश करता था और अपने साथियों के साथ रात को खूब भौंकता-चिल्लाता, इधर-उधर दौड़ लगाता रहता था। थोड़ी देर खेलने के बाद फिर सब बर्फ में घर बनाकर सो जाते थे। बक धीरे-धीरे अपनी पुरानी जिन्दगी को भूलता जा रहा था।



3

बक पहले की अपेक्षा जितना खूँखार हो गया था, उतना ही समझदार और चालाक भी हो गया था। वह मालिकों की मार से बचने की कोशिश करता था और कभी भी उनकी पकड़ में नहीं आता था। इस तरह वह अपने शत्रु स्पिट्ज से किसी दिन खुलकर लड़ने का मौका देख रहा था। लेकिन वैसे आम तौर से उससे दूर ही रहता था।

स्पिट्ज भी बक से बहुत अधिक घृणा करता था और मौके-बेमौके उसे लड़ने के लिए ललकारता रहता था। दोनों में इतनी शत्रुता बढ़ गई थी कि अब इसका अन्त एक या दूसरे की मृत्यु से ही हो सकता था। दोनों कुत्तों ने जिस क्षण एक-दूसरे को देखा था, उसी क्षण से एक-दूसरे को अपना दुश्मन मान लिया था। यह दुश्मनी दिनों-दिन बराबर बढ़ती चली जा रही थी। चूँकि स्पिट्ज पुराना और अनुभवी कुत्ता था, दल में दूसरे सभी कुत्ते उससे डरते थे और उसे अपना नेता मानते थे। डरते तो वे बक से भी थे लेकिन बक उनका नेता नहीं था। मालिक लोग भी सिर को ही गाड़ी में सबसे आगे जोतते थे और उसका कुछ ज्यादा ही ख्याल रखते थे। लेकिन मालिकों को भी यह पता था कि दोनों कुत्तों में आपस में बनती नहीं है इसलिए वे भी ऐसी कोशिश करते थे कि उनमें लड़ाई न होने पाए।

एक दिन की बात है, सूरज छिपने पर एक बर्फीली आँधी से बचने के लिए उन्होंने एक झील के किनारे पड़ाव डाला। हवा इतनी तेजी से चल रही थी कि उन्हें अपना तम्बू लगाने के लिए काफी देर तक कोई मौके की जगह ढूँढ़नी पड़ी। अन्त में उन्हें दीवार की तरह सीधी खड़ी एक चट्टान मिल गई और उसकी आड़ में उन्होंने अपना तम्बू तान लिया। फिर उन्होंने पानी में बहकर आई कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और आग जलाई। लेकिन आग बर्फ में थोड़ी ही देर में बुझ गई और उन्हें अँधेरे में ही ठण्डा खाना खाना पड़ा।

बक ने भी मौका देखकर चठ्टान के ठीक नीचे ही अपना गड्ढा बनाया। यह बड़ी सुरक्षित और गर्म जगह थी, इसलिए फ्रांकोइस यहाँ खाना गर्म करने लगा तो बक को अपनी जगह छोड़कर जाना बुरा लगा। लेकिन खाना खत्म होने के बाद जब वह लौटा तो उसने अपने गड्ढे में किसी और को बैठे पाया। जब चेतावनी में वह गुर्राया तो उसे पता चला कि उसकी जगह में घुसपैठ करने वाला और कोई नहीं बल्कि स्पिट्ज ही था। अब तक वह अपने शत्रु से झगड़ा बचाता आ रहा था। लेकिन अब उसके लिए और सहन करना मुश्किल हो गया। वह दाहड़ता हुआ स्पिट्ज पर टूट पड़ा।

स्पिट्ज थोड़ी देर के लिए तो भौंचक्का रह गया। बक के बारे में स्पिट्ज का अब तक का

अनुभव यही था कि उसका विरोधी एक बहुत दब्बू कुत्ता है और लड़ाई झगड़े से बचने की कोशिश करता है। इस अचानक हमले से संभलते उसे देर लगी। फिर तो दोनों आपस में गुत्थमगुत्था हो गए और खूब लड़े। लेकिन इसी बीच एक अनहोनी घटना घटी। अगर यह घटना नहीं घटी होती तो उसी दिन नेता के पद के लिए दोनों कुत्तों में एक लम्बे समय से चला आ रहा यह संघर्ष अवश्य समाप्त हो जाता।

हुआ यह कि भूखों मरते कोई चालीस-पचास जंगली एस्किमो कुत्तों ने अचानक पड़ाव पर हमला कर दिया। आदिवासियों के किसी गाँव से उन्होंने इस पड़ाव को सूँघ लिया था। खाने के लालच में बे दबे-पाँव बहुत पास तक आ पहुँचे। वे सभी बहुत दुबले-पतले और हड्डियों के ढाँचे-भर थे। इस तरह के भूखे कुत्तों के झुण्ड इस इलाके में बराबर घूमते रहते थे।

जैसे ही पिराल्ट की नजर एक भुखमरे-से कुत्ते पर पड़ी, उसने कसकर अपना डण्डा उसकी पीठ पर जमा दिया। वह कुत्ता बड़ी बुरी तरह से चीखता हुआ भाग गया। लेकिन जब बक और स्पिट्ज लड़ रहे थे तो जंगली कुत्ते चुपचाप बिलकुल खेमे के अन्दर घुस आए। दोनों आदमी डंडे लेकर उन्हें भगाने लगे। डण्डे उन पर लगातार पड़ते रहे लेकिन वे संख्या में इतने अधिक थे कि उनको एक साथ भगाना मुश्किल हो गया। खाने की जो भी चीज उनके सामने पड़ीं, उसको उन्होंने चबा डाला। यहाँ तक कि बिस्तर, जूते और चमड़े की दूसरी चीजें भी उनसे नहीं बच सकीं।

अब तक दल के दूसरे कुत्ते भी अपने-अपने गड्ढों से बाहर निकल आए और इन हमलावरों पर टूट पड़े। बक और स्पिट्ज भी अपनी लड़ाई भूलकर हमलावरों से गुँथ गए। बड़ी भयानक लड़ाई हुई। ऐसे गन्दे और दुबले-पतले भद्दे-से कुत्ते बक ने पहले कभी नहीं देखे थे। लगता था जैसे हड्डियों के ढाँचे पर किसी ने ढीली-ढाली खाल टाँग रखी हो। लेकिन उनकी आँखें लाल सुर्ख थीं और वे आधे पागल-से मालूम हो रहे थे। आसानी से उनका विरोध नहीं किया जा सकता था। दल के कुत्ते भी एक बार तो उनसे टकराकर वापस लौट आए।

बक पर तीन-चार हमलावर कुत्ते एक साथ टूट पड़े और पल-भर में उन्होंने उसके सिर और कन्धे का मांस फाड़ दिया। सभी कुत्ते बुरी तरह से भौंक रहे थे। दल के कुत्ते बड़ी बहादुरी से हमलावरों का सामना कर रहे थे। लेकिन सब के सब बुरी तरह से घायल हो चुके थे।

जब लड़ाई तेजी पर थी तो एक बार बक को लगा कि कोई उसके गले पर दाँत गड़ा रहा है। उसने घूमकर देखा तो वह स्पिट्ज ही था जो धक्के से बराबर उस पर हमला कर रहा था। बक को ऐसे मौके पर उसकी यह हरकत बहुत बुरी लगी। उसने कसम खा ली कि मौका मिलते ही वह स्पिट्ज की जरूर मरम्मत करेगा। पिराल्ट और फ्रांकोइस ने अपने कुत्तों की मदद से किसी तरह अन्त में भुखमरे कुत्तों की भीड़ को वहाँ से खदेड़ दिया। इस दौड़ में भी स्पिट्ज ने बक को धक्का देकर गिराने की कई बार कोशिश की, लेकिन बक बराबर बचता रहा, क्योंकि वह जानता था कि अगर वह जमीन पर गिरा तो एस्किमो कुत्तों की भीड़ उस पर टूट पड़ेगी और वह मारा जाएगा।

हमले के बाद पिराल्ट और फ्रांकोइस अपने कुत्तों की देखभाल में जुट गए। उनमें से एक भी कुत्ता ऐसा नहीं बचा था, जिसके चार या पाँच घाव नहीं लगे थे। कुछ के घाव तो बहुत गहरे थे। कोई लंगड़ाकर चल रहा था और किसी की आँख फूट गई थी। एक कुत्ते का कान तो ऐसे चबाया गया कि तार-तार हो गया था। वह सारी रात चीखता-चिल्लाता रहा।

सुबह पिराल्ट ने देखा कि उनका बहुत नुकसान हुआ है। हमलावर कुत्तों ने बहुत-सा खाना खराब कर दिया था। उन्होंने बर्फगाड़ियों की पट्टियाँ और यहाँ तक कि कैनवास के पर्दे भी चबा डाले थे। जब सुबह सब कुत्ते गिरते-पड़ते इकट्ठे हुए तो फ्रांकोइस ने कहा, "बेचारे! हरेक का बुरा हाल है। मुझे तो डर है कि कहीं ये सब पागल न हो जाएँ, क्योंकि भुखमरे कुत्तों के दाँतों में पागलपन का जहर होता है।"

पिराल्ट को भी इस बात का डर था। दोनों आदमियों ने मिलकर जल्दी-जल्दी कुत्तों की मरहम-पट्टी की और फिर उन्हें गाड़ी में जोत दिया। अभी उन्हें बहुत लम्बा रास्ता तय करना था। आगे की यात्रा बड़ी कठिन थी। उन्हें अब कम से कम तीस मील की यात्रा करनी थी। इसके बाद ही कहीं उन्हें डेरा डालने का मौका मिल सकता था। बीच में एक बड़ी नदी भी पड़ती थी, जिसका पानी कहीं तो जम गया था और कहीं बड़ी तेजी से बह रहा था।

पिराल्ट रास्ता दिखाता हुआ अपने दल को लेकर आगे बढ़ता रहा। कई बार वह बर्फ के टूट जाने से पानी में डूबते-डूबते बचा। इसके लिए वह एक लम्बा बांस अपने हाथ में रखता था और जब वह कभी किसी गड्ढे में धँस जाता तो बांस का सहारा ले लेता था। बर्फ इतनी ज्यादा गिर रही थी कि आगे का रास्ता देखना मुश्किल हो रहा था। लेकिन पिराल्ट रुकने का नाम नहीं लेता था। उसे डाक और सरकारी चिट्ठियाँ वगैरह समय पर पहुँचानी थीं। वह ऐसी कठिन यात्रा कई बार पूरी कर चुका था।



एक बार तो उनकी पूरी बर्फगाड़ी ही पानी में डूबते-डूबते बची। बर्फ की तह अचानक फट गई और गाड़ी उसमें धँसने लगी। कुछ कुत्ते भी पानी में डुबकियाँ लगाने लगे। किसी तरह सबको खींचकर ठोस बर्फ पर लाया गया। फिर दोनों आदमियों ने बड़ी मुश्किल से आग जलाकर उसके चारों ओर इतने नजदीक और इतनी देर तक कुत्तों को दौड़ाया कि वे लपटों से झुलसने लगे और उनको पसीना आ गया।

जब सब कुछ ठीक हो गया और उसका दल आगे बढ़ा तो कुछ दूर जाने पर एक नई मुसीबत आ खड़ी हुई। बर्फ की पट्टी उनके आगे और पीछे इस तरह टूट गई कि थोड़ी देर के लिए तो लगा कि उन लोगों का बचना ही मुश्किल है लेकिन पिराल्ट बहुत बहादुर था। वह घबराया नहीं और एक टीले पर चढ़ गया। फिर गाड़ी की पट्टियों और चाबुक की डोरी वगैरह मिलाकर एक लम्बी-सी रस्सी तैयार की गई और कुत्तों को एक-एक करके टीले पर चढ़ाया गया। किसी तरह खींचकर गाड़ी को भी टीले पर चढ़ाया गया। फिर इसी तरह रस्सियों के सहारे वे लोग दूसरे किनारे पर उतरे। इसी तरह पूरे दिन में वे सिर्फ चौथाई मील ही चल सके।

जब तक वे लोग ठोस बर्फ तक पहुँचे तब तक बक बहुत थक चुका था। बाकी कुत्तों की भी यही दशा थी। लेकिन कसर पूरी करने के लिए पिराल्ट और उसका साथी दोनों मिलकर गाड़ी को खींचते थे। तीन दिन की लम्बी यात्रा के बाद वे लोग गिरते-पड़ते एक बस्ती में

पहुँचे। यहाँ डेरा डालने के बाद सभी कुत्ते आराम करने लगे। लगभग सभी के पैर बर्फ पर चलते-चलते फट चुके थे।

बक के लिए तो इतनी लम्बी दूरी तक बर्फ पर चलने का यह पहला मौका था। वह कई दिनों तक इस तरह पड़ा रहा कि खाना खाने के लिए भी नहीं उठता था। हर रात फ्रांकोइस काफी देर तक बक के पैरों की मालिश करता था। फिर उसने हिरण के मुलायम चमड़े के अपने जूतों के सिरे काटकर बक के लिए चार जूते तैयार किए। इन जूतों से बक को बड़ा आराम मिला। कुछ दिनों बाद बक के पैर ठीक हो गए और उसके घिसे हुए जूते फेंक दिए गए।

कुछ आगे बढ़ने पर एक दिन अचानक उनके दल की एक कुतिया पागल हो गई। वह भेड़िए की तरह इतने जोर से चीखने लगी कि दल का हर कुत्ता मारे डर के काँपने लगा। अचानक वह सीधी बक पर झपटी। बक ने इससे पहले कभी किसी कुत्ते को पागल होते नहीं देखा था। पहले तो वह कुछ समझा नहीं, फिर जान बचाकर तेजी से भाग निकला। लेकिन कुतिया ने भी उसका पीछा नहीं छोड़ा। दोनों इसी तरह भागते रहे।

बक ने आगे चलकर जंगल का सहारा लिया। यह जंगल और कुछ नहीं, एक जगह बर्फ में बहुत-से पेड़ों का झुरमुट-सा था। लेकिन यहाँ भी कुतिया ने उसका पिंड नहीं छोड़ा। बक उसे चकमा देकर वापस डेरे की ओर लपका। अगर अचानक मौके पर फ्रांकोइस उसकी मदद के लिए नहीं आ जाता तो उस दिन कुतिया उसका बुरा हाल कर देती। जब फ्रांकोइस की नजर उन पर पड़ी तो वह समझ गया कि क्या मामला है। वह एक कुल्हाड़ी लेकर बक के रास्ते में एक जगह छिपकर खड़ा हो गया। जैसे ही बक उसके सामने से निकला और फिर पीछे लगी कुतिया वहाँ पहुँची तो फ्रांकोइस ने कुल्हाड़ी फेंककर उस पागल कुतिया का काम तमाम कर डाला।

बक जान बचाकर अँधे की तरह भागा चला जा रहा था। अचानक वह एक बर्फगाड़ी से टकराकर गिर पड़ा। वह बुरी तरह से हाँफ रहा था और बेबस था। स्पिट्ज जैसे इसी मौके की ताक में था। वह बक पर झपटा। दो बार इसके दाँत बक के सिर में गड़े और उन्होंने हड्डी तक उसका मांस चीर डाला। जब फ्रांकोइस की नजर इस पर पड़ी तो उसने अपना कोड़ा उठा लिया और स्पिट्ज को इतना मारा, जितना उसने आज तक दल के किसी कुत्ते को नहीं मारा था।

पिराल्ट यह सब देखकर बोला, “बड़ा दुष्ट है यह स्पिट्ज! किसी दिन यह बक को मार डालेगा।”

फ्रांकोइस ने कोड़ा अलग फेंकते हुए कहा, “हाँ, लेकिन यह बक भी कम नहीं है। पूरा दैत्य ही है। इसे कोई मौका मिलेगा तो यह भी स्पिट्ज को पूरा का पूरा चबा डालेगा।”

इस दिन के बाद से दोनों कुत्तों में युद्ध की स्थिति रहने लगी। अब बक दल का नेता बनने के लिए उसे खुले रूप में चुनौती देने लगा। वह जान-बूझकर स्पिट्ज से लड़ने का मौका ढूँढ़ने लगता था। जब स्पिट्ज दल के किसी कमजोर कुत्ते को धमकाने की कोशिश करता था तो बक उसकी रक्षा के लिए आगे आ जाता था और स्पिट्ज को कुछ सोचकर वहाँ से हटना

पड़ जाता था। बक की मदद पाकर दल के बहुत-से कुत्तों ने अब स्पिट्ज से डरना छोड़ दिया था।

इस तरह दल के कुत्तों में बड़ी अव्यवस्था फैल रही थी। अब कोई किसी की नहीं सुनता था। रोज कोई न कोई झगड़ा-फसाद मचा रहता था और फ्रांकोइस कभी बक को और कभी स्पिट्ज को पीटने के लिए मजबूर हो जाता था। फ्रांकोइस जानता था कि अब वह दिन दूर नहीं, जब इन दोनों कुत्तों में जिन्दगी और मौत की लड़ाई होगी। कई बार तो ऐसा हुआ कि वह रात के समय कुत्तों के भौंकने और झगड़े की आवाज सुनकर बिस्तर छोड़कर इस डर से बाहर निकल आता था कि बक और स्पिट्ज आपस में झगड़ न पड़ें।

लेकिन अभी वह मौका नहीं आया था। उनका दल उत्तरी क्षेत्र के डासन नामक नगर में पहुँच चुका था। यह नगर क्या, बहुत लोगों की एक बड़ी बस्ती थी। वहाँ बहुत-से लोग डेरे डाले पड़े थे और उनके पास अनगिनत कुत्ते थे। बक ने देखा कि यहाँ कुत्ते सभी तरह का काम करते थे। दिन-भर उनकी लम्बी पंक्तियाँ सड़कों पर आती-जाती रहती थीं और रात में भी वे अपनी घंटियों को बजाते हुए चलते ही रहते थे।

एक सप्ताह तक यहाँ आराम करने के बाद दल आगे बढ़ा। एक ही दिन में पचास मील की यात्रा करके वे दूसरी बस्ती में जा पहुँचे। इस बस्ती में भी बक से स्पिट्ज की एक-दो बार मुठभेड़ हुई। लेकिन जमकर लड़ाई अभी तक नहीं हो सकी थी। अब दल के दूसरे कुत्ते स्पिट्ज की ज्यादा परवाह नहीं करते थे और बक के पीछे-पीछे घूमते रहते थे।

एक रात को खाना खाने के बाद दल के एक कुत्ते की नजर बर्फ जैसे सफेद खरगोश पर पड़ी। वह चूक गया और खरगोश हाथ से निकल गया। पल-भर में पूरा का पूरा दल उस खरगोश के पीछे दौड़ पड़ा। कुछ ही दूरी पर पुलिस का डेरा भी पड़ता था। वहाँ के पचास कुत्ते भी इस दल में आ मिले। सब कुत्ते खरगोश का पीछा करने लगे। इन सभी कुत्तों का नेता इस समय बक था। स्पिट्ज भी भीड़ में शरीक था, लेकिन वह बक से कुछ पीछे था।

खरगोश का पीछा करते-करते कुत्ते बहुत दूर निकल गए। रास्ते में एक छोटी-सी नदी पड़ी, जो उस समय जमी हुई थी। खरगोश नदी की बर्फ पर छलाँग मारता हुआ भागा चला जा रहा था और कुत्ते उसके पीछे सरपट दौड़ रहे थे। एक जगह मौका पाकर स्पिट्ज बगल से निकल गया। वह घुमाव की तरफ से आगे जा पहुँचा और खरगोश के सामने खड़ा हो गया। खरगोश जैसे ही उधर से निकला स्पिट्ज ने उसे दाँतों से धर दबोचा। क्षण-भर में ही बक भी दूसरे कुत्तों के साथ वहाँ पहुँच गया।

स्पिट्ज थोड़ी देर के लिए भौंचक्का रह गया। उसके बाद इतने कुत्तों के बीच खरगोश का क्या हुआ, किसी को पता नहीं लेकिन न मालूम कैसे स्पिट्ज और बक एक-दूसरे से भिड़ गए। देखते-देखते दोनों के बीच बड़ी भयानक कुश्ती शुरू हो गई। थोड़ी देर के लिए तो भुरभुरी बर्फ में दोनों इस तरह उलटते-पलटते रहे कि यह पता लगाना मुश्किल हो रहा था कि कौन जीत रहा है और कौन हार रहा है!

दूसरे कुत्ते फौरन उनके चारों ओर एक घेरा बाँधकर खड़े हो गए। वे बराबर अपने होंठ चाट रहे थे और गुर्रा रहे थे। उनके बीच दो ताकतवर कुत्ते आज जिन्दगी और मौत की लड़ाई

लड़ रहे थे। दोनों पैंतरे बदल-बदलकर चीखते हुए एक-दूसरे पर झपटते थे और फिर थोड़ी देर गुत्थमगुत्था होने के बाद अलग खड़े होकर गुर्राते हुए एक-दूसरे को घूरने लगते थे। चाँदनी रात में बर्फ से ढके हुए उस सुनसान जंगली इलाके में एक-दूसरे के खून के प्यासे कुत्तों की आवाज बड़ी भयानक लग रही थी।

स्पिट्ज पुराना लड़ाकू कुत्ता था। वह ऐसी कई लड़ाइयों में अपने विरोधियों को पछाड़ चुका था। इसीलिए अपने दल का अब तक एकछत्र नेता था। वह जितना बहादुर था उतना ही समझदार और चालाक भी था। लड़ाई में वह कभी भी घबराता नहीं था और न कभी भागने की कोशिश करता था। बक ने कई बार उसकी गर्दन पर दाँत गड़ाने की कोशिश की, लेकिन स्पिट्ज ने उसे हर बार जमीन पर दे मारा।

दूसरे कुत्तों का ख्याल था कि इस लड़ाई में स्पिट्ज तगड़ा पड़ रहा है क्योंकि अब तक वह कई बार बक को पटखनी दे चुका था। बक खून से तर था और बुरी तरह से हाँफ रहा था। एक बार बक गिरा तो लगभग साठ कुत्तों का वह पूरा घेरा उसकी ओर झपटने ही वाला था कि वह फौरन पीठ झाड़कर खड़ा हो गया। घेरा पीछे हटकर फिर इन्तजार करने लगा।

बक ने आज तक इतनी भयानक लड़ाई नहीं लड़ी थी। स्पिट्ज ने एक तरह से उसके छक्के छुड़ा दिए थे। अचानक वह गर्दन नीची करके बिजली की तेजी से झपटा और उसने अपने दाँत स्पिट्ज की अगलीं बाईं टाँग पर कस दिए। हड्डी टूटने की कच्छर-सी आवाज हुई और स्पिट्ज लंगड़ाने लगा।

बक ने दूसरी बार में स्पिट्ज की दायीं टाँग भी तोड़ दी। दर्द से चीखते हुए स्पिट्ज बर्फ पर गिर पड़ा और घेरे के कुत्ते उस पर टूट पड़े।

बड़ी मुश्किल से बक उछलकर घेरे से बाहर आया। तब तक कुत्तों ने स्पिट्ज की बोटी-बोटी नोंच डाली। बक ने चाँद की ओर मुँह करके एक राक्षसी दहाड़ में अपनी विजय की घोषणा की। अब वह कुत्तों का माना हुआ नेता था।

4



दूसरे दिन सुबह जब कुत्तों को गाड़ी में जोतने की बारी आई तो फ्रांकोइस ने देखा कि स्पिट्ज गायब था। बक के शरीर पर लगे घावों को देखकर वह समझ गया कि मामला क्या है। उसने पिराल्ट को आवाज दी और कहा, "देखा तुमने, आखिर ये लोग लड़ ही मरे! मालूम होता है, इसने स्पिट्ज को मार डाला है।"

पिराल्ट बोला, "हाँ ऐसा ही लगता है। दोनों एक-दूसरे के दुश्मन हो गए थे। अच्छा चलो, कुत्तों को जोतो।"

फ्रांकोइस जब गाड़ी में कुत्तों को जोतने लगा तो बक सबसे आगे की उस जगह पर आ खड़ा हुआ, जहाँ रोज स्पिट्ज खड़ा होता था।

"भागो यहाँ से!" फ्रांकोइस चिल्लाया। उसने बक को धक्का देकर अलग करने की कोशिश की। वह स्पिट्ज की जगह एक दूसरे पुराने कुत्ते को सबसे आगे रखना चाहता था। लेकिन बक वहाँ से टलने के लिए तैयार नहीं था। जैसे ही वह कुत्ता आगे आया, बक गुर्राकर उस पर झपटा और उसने उसे वहाँ से खदेड़ दिया। फ्रांकोइस को यह बात बड़ी बुरी लगी। उसने डंडा उठा लिया। बक गुर्राते और भौंकते हुए इधर-उधर चक्कर काटने लगा और डंडे की मार से बराबर बचता रहा। अब वह इस मामले में भी उस्ताद हो गया था। अब उसे कोई आसानी से पीट नहीं सकता था। काफी देर की दौड़-धूप के बाद भी जब बक नहीं माना तो पिराल्ट ने फ्रांकोइस को आज्ञा दी, "डंडा फेंक दो! जाने दो, बक को ही सबसे आगे रख लो!"

फ्रांकोइस ने बक को गर्दन से पकड़कर, सबसे आगे खड़ा कर दिया और प्यार से उसे घूँसा मारते हुए कहा, "चल, आज से तू हमारे कुत्तों का नेता हुआ!"

और सचमुच बक एक अच्छा नेता साबित हुआ। वह दल के सभी कुत्तों को घेर-घारकर काम में लगा देता था और उनसे खूब कसकर काम लेता था। खुद भी मेहनत करता था और दूसरों से भी मेहनत करवाता था।

उनमें एक कुत्ता बड़ा हरामखोर था। अपनी छाती पर बँधी पट्टी पर वह कभी भी पूरा जोर नहीं लगाता था। बक ने बार-बार कान खींचकर उसकी आदत ठीक कर दी। अब काम के समय या खेलकूद के समय कोई भी कुत्ता बक की आज्ञा न मानने की हिम्मत नहीं कर सकता था। पिराल्ट और फ्रांकोइस भी उसके काम से बहुत खुश थे। पिराल्ट ने बक की मदद से अपनी यात्रा का काफी बड़ा भाग समय से पहले पूरा कर लिया।

दूसरे सप्ताह के अन्त तक वे लोग कनाडा के उत्तरी समुद्र की ढलान पर जा पहुँचे। उन्हें दूर से जहाजों पर रोशनियाँ दिखाई देने लगीं। पिछले चौदह दिनों से वे लोग चालीस मील प्रतिदिन की रफ्तार से चले थे। कुत्तों को साधनेवालों और चालकों ने उन्हें बड़ी बधाइयाँ दीं और उनके दल के कुत्तों की बड़ी तारीफ की। जो भी जाता था, वह बक को देखकर बहुत खुश होता था और प्यार से उसकी पीठ थपथपाते हुए उसे शाबाशी देता था। ऐसे समय गर्व से बक की छाती दूनी हो जाती थी। उसका मालिक उससे इतना खुश था कि अब जब भी कभी वह आग के पास लेटने की कोशिश करता था तो उसे वहाँ से भगाया नहीं जाता था। खाने के लिए भी कभी-कभी उसे दूसरे कुत्तों से ज्यादा मिल जाता था।

आगे की यात्रा बड़ी कठिन थी। पिराल्ट की गाड़ी पर डाक के कई बड़े-बडे थैले लाद दिए गए थे। मौसम भी बहुत खराब था। हर रोज बर्फ गिरती थी। कुत्तों को गाड़ी खींचने के लिए बहुत ज्यादा मेहनत करनी पड़ती थी। कई कुत्ते तो इस यात्रा में बीमार हो गए। कड़ी मेहनत के कारण सभी कुत्ते दुबले हो गए थे और उनका वजन घट गया था। उनके चालक भी थककर चूर हो रहे थे।

किसी तरह तीन दिन और बीते। अगले पड़ाव पर जब वे लोग पहुँचे तो वहाँ पिराल्ट को उम्मीद थी कि वे कुछ दिन रुककर आराम कर सकेंगे। लेकिन कई दिनों तक लगातार बर्फ गिरने के कारण वहाँ भी बहुत ज्यादा डाक जमा हो गई थी। इसके अलावा कई जरूरी सरकारी कागज भी थे, जिन्हें आगे पहुँचाना था। यहाँ दल के कुछ थके हुए, बीमार और बेकार कुत्तों को अलग कर दिया था और उनकी जगह नए कुत्तों को भरती किया गया।

दो-चार दिन बाद ही एक अगले मुकाम पर दल के काफी पुराने कुत्तों को भी निकाल दिया गया। सुबह-सुबह पिराल्ट के साथ जो अजनबी आदमी आए उन्होंने पुराने कुत्तों का सौदा कर लिया वे बड़े खुश थे क्योंकि उन्हें कुत्ते बहुत सस्ते में मिल गए थे। बक भी इन्हीं कुत्तों में था। जब वे लोग पिराल्ट से अलग होने लगे तो पिराल्ट ने आगे बढ़कर बक को थपथपा दिया। बक को ऐसा लगा जैसे उनसे अलग होते हुए पिराल्ट को दुःख हो रहा है। बक को भी यह स्थिति अच्छी नहीं लगी। अब वह भी पिराल्ट और फ्रांकोइस को चाहने लगा था और इस कारण उनसे अलग होने को उसका मन नहीं हो रहा था। लेकिन मजबूरी थी। पिराल्ट और फ्रांकोइस नए कुत्तों के साथ अपने रास्ते पर आगे बढ़ गए। बक अपने नए मालिकों के डेरे पर पहुँचा।

बक को अपने नए मालिक कुछ अच्छे नहीं लगे। ये लोग सोने की खोज में जा रहे थे और इन्हें अपनी गाड़ी के लिए कुछ कुत्तों की जरूरत थी। दोनों के साथ एक स्त्री भी थी, जिसे लोग मर्सिडीज कहकर पुकारते थे। आदमियों में से एक का नाम चार्ल्स था, वह मर्सिडीज का पति था और दूसरे का नाम था हॉल। हॉल मर्सिडीज का भाई था।

बक को इन लोगों का रहन-सहन कुछ अजीब-सा लगा। पिराल्ट के दल में हमेशा एक जल्दबाजी और चुस्ती का वातावरण रहता था लेकिन यहाँ हर काम में बड़ी ढीलढाल और अव्यवस्था रहती थी। जब वे लोग तम्बुओं को उखाड़ने और गाड़ी पर लादने के लिए बढ़े तो बक को उनके काम करने के ढंग देखकर बड़ी हैरानी हुई। तम्बुओं को लपेटकर उन्होंने एक

बड़ा भद्दा-सा गट्ठर बना लिया। टीन के बर्तनों को बिना धोए ही बाँध लिया। मर्सिडीज हमेशा आदमियों से चख-चख करती रहती थी। गाड़ी में सामान इस तरह लादा जा रहा था कि एक चीज ऊपर रखी जाती थी तो दूसरी चीज नीचे लुढ़क आती थी।

बक ने देखा कि पास के तम्बुओं से कुछ लोग बाहर निकल आए थे और यह देखकर हँस रहे थे। उनमें से एक आदमी ने सलाह देते हुए कहा, “आप लोगों का सामान बहुत ज्यादा हो गया है। ये कुत्ते इतनी भारी गाड़ी नहीं खींच सकेंगे। अगर किसी तरह खींच ले गए तो भी गाड़ी कहीं रास्ते में बर्फ में धँस जाएगी क्योंकि कई जगह अभी बर्फ बहुत पतली है।”

दूसरा आदमी बोला, “इसके अलावा अब मौसम बदलने वाला है। अब ठण्ड इतनी नहीं होगी। बसन्त आने वाला है। ऐसे में भारी बर्फगाड़ी का चलना मुश्किल हो जाता है।”

लेकिन वह स्त्री अपने सामान में से एक भी चीज फेंकने के लिए तैयार नहीं हो रही थी। दोनों आदमी भी बुरी तरह से आपस में बहस कर रहे थे। उन्होंने सलाह देने वालों में से किसी की बात नहीं मानी और किसी तरह खींच-तानकर सारा सामान गाड़ी पर बाँध दिया।

फिर हॉल ने चाबुक फटकारते हुए कुत्तों से कहा, “चलो!” कुत्तों ने छाती पर की पट्टी पर बड़ा जोर डाला, लेकिन गाड़ी ने हिलने का नाम तक नहीं लिया। हॉल चाबुक से कुत्तों को पीटने लगा। लोगों ने उसे बहुत समझाने की कोशिश की, लेकिन वह अपनी जिद पर अड़ा रहा। अन्त में किसी तरह धक्का देकर गाड़ी को आगे खिसकाया गया। थोड़ी दूर पर ढलान थी। गाड़ी लुढ़कती-पुढ़कती आगे बढ़ी।

हॉल को बर्फ की गाड़ी चलाने का कोई अनुभव नहीं था। वह यहाँ भी कुत्तों पर चाबुक फटकारता रहा। कुत्ते तेजी से दौड़ चले और ढलान पर गाड़ी इतनी जोर से लुढ़की कि आगे चलकर उलट गई। सारा सामान इधर-उधर फैल गया। कुत्ते खाली गाड़ी को खींचते हुए भागते चले गए। काफी दूर जाकर लोगों ने किसी तरह उन्हें रोका। फिर गाड़ी को लौटाकर उस जगह लाया गया जहाँ हॉल हाथ में चाबुक थामे खड़ा था और मर्सिडीज अपना सामान बटोर रही थी।



जब चार्ल्स फालतू चीजें फेंककर सामान कम करने लगा तो वह रोने और चीखने लगी लेकिन उसने परवाह नहीं की और थोड़ी ही देर में सामान आधा कर दिया। फिर से सामान गाड़ी पर लाद दिया गया। इसके अलावा चार्ल्स ने कुछ और कुत्ते अपने दल में बढ़ा लिए। अब कुल चौदह कुत्ते उसकी गाड़ी खींच रहे थे।

लोगों ने इस बात के लिए भी उन्हें समझाने की कोशिश की कि इतने सारे कुत्ते एक बर्फगाड़ी में नहीं जोतने चाहिए। क्योंकि एक गाड़ी सामान के अलावा चौदह कुत्तों के योग्य खाना नहीं ले जा सकती। लेकिन चार्ल्स और हॉल अब किसी की कोई बात सुनने के लिए तैयार नहीं थे। गाड़ी आगे बढ़ी। बक और उसके साथियों में इस यात्रा के लिए कोई उत्साह नहीं था। थकान से चूर वे चले जा रहे थे।

नए मालिकों की सेवा में बक ज़रा भी खुश नहीं था। वह कसकर काम करने और भरपेट खाना खाने का आदी था। लेकिन यहाँ तो कुछ ही दिनों में खाना कम पड़ने लगा और कुत्तों को आधे पेट ही खाना मिलने लगा। अभी सारी दूरी का एक चौथाई हिस्सा ही तय हुआ था। बीच में कहीं खाना मिलने की उम्मीद नहीं थी। धीरे-धीरे कुत्ते भूख से मरने लगे। सबसे पहले डब मरा। बक को इसका बड़ा दु:ख हुआ, क्योंकि डब उसका एक पुराना साथी था। इसके बाद एक कुत्ते के कन्धे की हड्डी उतर गई और उसे भी रास्ते में छोड़ दिया गया। आगे की यात्रा दिनों दिन कठिन होती जा रही थी। बक देखता था कि मालिकों में भी आपस में नहीं बन रही थी। वे लोग दिन भर जोर-जोर से बहस करते थे और झगड़ते थे। मर्सिडीज किसी तरह बीच-बचाव करने की कोशिश करती रहती थी और फिर रोने लगती थी।

वह खुद भी बहुत दु:खी रहती थी। स्त्री होने के कारण उससे अब यात्रा का कष्ट सहन नहीं होता था। वह बहुत चिड़चिड़े स्वभाव की होती जा रही थी। वह हमेशा अपने पति और भाई से शिकायत करती रहती थी कि वे लोग उसके आराम का ख्याल नहीं रखते हैं। उसने

अब चलते नहीं बनता और वह गाड़ी पर सवार होकर चलना चाहती थी। लेकिन कमजोर और अधभूखे कुत्तों के लिए सामान को खींचना ही मुश्किल हो रहा था। वह बार-बार गाड़ी पर बैठ जाती थी और उसे जबरदस्ती नीचे उतार दिया जाता था। एक जगह तो रास्ते में ही वह बैठ गई। वे लोग अपनी राह चल दिए तब भी वह नहीं हिली। जब वे लोग तीन मील बढ़ गए तो फिर उन्होंने गाड़ी का सामान उतारा और उसे लाने के लिए वापस आए।



5

चार्ल्स और हॉल खुद परेशान होने के कारण अब अपने कुत्तों के साथ भी बहुत बुरा व्यवहार करते थे। खाने को तो उन्हें पहले ही आधा पेट दिया जाता था। ऊपर से दिन-भर हॉल उन पर चाबुक चलाता रहता था। एक जगह कुत्तों का खाना बिलकुल समाप्त हो गया। उन्होंने एक बूढ़े गोरे के हाथ अपना शिकारी चाकू और रिवाल्वर बेचकर कुछ पौण्ड बर्फ लगा घोड़े का चमड़ा ले लिया। खाने के स्थान पर इस चमड़े का प्रयोग किया जाने लगा। कुत्तों ने इसे बिलकुल पसन्द नहीं किया, लेकिन इसके अलावा खाने की और कोई चीज ही नहीं थी। जब कुत्ते इसे चबा-चबाकर इसे अपने पेट में उतारते थे, यह चमड़े की अनगिनत पतली डोरियों और छोटे-छोटे बालों के ढेर के रूप में बिखर जाता था।

इसी हालत में बक अपने दल का नेता बना सबसे आगे चलता था। वही किसी तरह गिरते-पड़ते गाड़ी को खींचता था और जब नहीं खींच पाता था तो गिर पड़ता था। गिरने पर वह तब तक पड़ा रहता था, जब तक चाबुक की मार उसे फिर अपनी पैरों पर खड़ा नहीं कर देती थी। वह भी बहुत दुबला हो गया था। चमकदार बालों वाली उसकी खाल की सारी सुन्दरता गायब हो चुकी थी।

अब कुल सात कुत्ते बच रहे थे। सभी हड्डियों के ढाँचे-भर रह गए थे। चाबुक या डण्डे की मार के बिना वे कोई काम नहीं करते थे। बक के सभी पुराने साथी एक-एक करके मरते जा रहे थे। बक शरीर से कमजोर जरूर हो गया था, मन से दुःखी भी रहता था लेकिन उसका दिल अटूटा था। अब भी वह मेहनत के साथ काम करता था और अच्छे दिनों के सपने देखता रहता था।

अब मौसम बदल गया था। बसन्त के कारण बर्फ कम होने लगी थी और पेड़ों पर हरियाली लौटने लगी थीं। सूरज जल्दी निकलता था और देर में छिपता था। सुबह तीन बजे ही सबेरा हो जाता था और रात में नौ बजे शाम होती थी। झाड़ियाँ हरी होने लगी थीं। पेड़ों पर तरह-तरह के पक्षी दिखाई देने लगे थे। ढलानों पर बर्फ के पिघलने से पानी की धाराएँ बह निकली थीं। नदियों और झीलों पर जमी हुई बर्फ पिघलने लगी थी। ऐसे में बर्फ की गाड़ियों को हाँकना और भी खतरनाक हो गया था। पता नहीं चलता था कि किस जगह से बर्फ का तल टूट जाएगा और गाड़ी पानी में धँस जाएगी।

सब लोग किसी तरह गिरते-पड़ते एक नदी के मुहाने पर पहुँचे जहाँ जान थार्नटन नाम का एक यात्री अपने तम्बू में कई दिन से रह रहा था। थार्नटन ने उन लोगों का स्वागत किया

और उनके आराम का इन्तजाम किया।

थार्नटन बड़ा चुप्प आदमी था और बहुत कम बोलता था। जब मर्सिडीज और उसके साथी उससे कोई सलाह माँगते तो वह बस एक-दो शब्द बोलकर चुप हो जाता था। पता नहीं क्यों बक को थार्नटन से प्यार हो गया था। वह उसे एक भला आदमी लगा। वह मौका पड़ने पर हमेशा थार्नटन के आस-पास मंडराने लगा। थार्नटन भी अक्सर उससे खेलता रहता था। जिस दिन वे लोग रवाना होने लगे उस दिन चार्ल्स ने थार्नटन से पूछा, “क्यों, हमने सुना है कि बर्फ के नीचे की तली टूट रही है? हमें तो अभी इस नदी की बर्फ जमी हुई नजर आती है। हम तो इसी रास्ते से आगे बढ़ता चाहते हैं।”

थार्नटन बोला, “भला मैं क्या कह सकता हूँ! खतरा तो है ही।” इतना कहकर वह चुपचाप मुस्कराने लगा।

ऐसा लगता था जैसे यह समझ गया कि ये लोग मूर्ख हैं और मूर्खों को सलाह देने से कोई फायदा नहीं। चार्ल्स भी झुँझलाकर उठा और कुत्तों को गाड़ी में जोतने के बाद आगे बढ़ने के लिए उन्हें पीटने लगा। सभी कुत्ते बुरी तरह से थके हुए थे और कोई भी आगे नहीं बढ़ना चाहता था। दूसरे कुत्ते तो किसी तरह से चलने के लिए राजी हो गए लेकिन बक ने साफ इन्कार कर दिया। उसे बहुत मारा गया, लेकिन फिर भी वह जमीन से नहीं उठा।

थार्नटन दूर बैठा सब देख रहा था। अन्त में वह चुप नहीं रह सका और पास आकर बोला, “बस करो। इस कुत्ते को तुम और ज्यादा नहीं मारो। यह अब आगे जाना नहीं चाहता। वैसे भी इसकी हालत बड़ी खराब है। इसे यहीं छोड़ दो।”

हॉल ने उसे धक्का देकर अलग करते हुए कहा, “हटो यहाँ से। यह कुत्ता हमारा है। हम इसे मारें या काटें, तुम कौन होते हो? हम इसे जरूर ले जाएँगे।”

यह बात उसने इतनी बुरी तरह से कही कि थार्नटन को गुस्सा आ गया। अन्त में दोनों में हाथापाई होने लगी। थानटन ने मौका पाकर अपना बड़ा-सा चाकू उठा लिया, जिससे वह अपनी कुल्हाड़ी का हत्था बनाने के लिए लकड़ी छील रहा था। चाकू को देखते ही चार्ल्स और हॉल पीछे हट गए और मर्सिडीज चिल्लाने लगी। थार्नटन ने आगे बढ़कर दो झटकों में ही बक के सारे फँदे काट दिए।



उन लोगों ने झगड़ा आगे बढ़ाना ठीक नहीं समझा। वे दूसरे कुत्तों को हाँकते हुए वहाँ से

आगे बढ़ गए। बक अब गुलामी से आजाद था और थार्नटन के रूप में उसे एक नया दोस्त मिल गया था।

चार्ल्स की गाड़ी हिचकोले खाती हुई नदी की बर्फ पर आगे बढ़ती जा रही थी। मर्सिडीज सामान के ऊपर बैठी हुई थी। अभी वे लोग बहुत दूर नहीं गए थे कि अचानक घाटी में एक जोर की चीख गूँज उठी। थार्नटन ने चौंककर देखा—चार्ल्स की गाड़ी का सिर्फ चौथाई भाग बाहर नजर आ रहा था और बाकी पूरी गाड़ी बर्फ के फटने से बने हुए एक गड्ढे में डूबी हुई थी। मर्सिडीज जोर से चिल्ला रही थी। थार्नटन उनकी मदद के लिए दौड़ा। बक भी उसके साथ ही साथ भागा। लेकिन जब तक वे वहाँ पहुँचे, कुत्ते, आदमी और गाड़ी सब गायब हो चुके थे और उस जगह बने गड्ढे में पानी भर आया था।

थार्नटन और बक ने एक-दूसरे की ओर देखा। फिर दोनों वापस अपने खेमे में लौट आए।

6



थार्नटन यहाँ लगभग एक महीने से डेरा डाले पड़ा था। असल में वह अपने साथियों के साथ उत्तर की ओर जा रहा था। ठण्ड तेज होने के कारण उसके पैरों को पाला मार गया, इसलिए उसके साथी उसे यहाँ आराम करने के लिए छोड़ गए थे। यहाँ उसके पास दिन-भर इधर-उधर घूमने के अलावा और कोई काम न था। उसके पास स्कीट नाम की एक कुतिया और निग नाम का एक कुत्ता था।

बक की इन कुत्तों से भी बड़ी जल्दी दोस्ती हो गई। स्कीट ने तो बक के घाव चाट-चाटकर उसे जल्दी चँगा कर दिया। बक को शुरू-शुरू में यह देखकर आश्चर्य हुआ कि थार्नटन के कुत्तों ने कभी भी उसके साथ लड़ाई नहीं की। वे हमेशा अपने खाने में से उसे खाना देते थे और दिन-भर उसके साथ खूब खेलते रहते थे। जज साहब के घर से निकलने के बाद से लेकर आज तक बक को कभी भी ऐसे अच्छे साथी नहीं मिले थे। थार्नटन तो इतना प्यार करता था कि उसको साथ लिए बिना कहीं भी नहीं जाता था। बक भी उसकी बड़ी इज्जत करता था क्योंकि एक तरह से थार्नटन ने ही उसकी जान बचाई थी। बक प्यार के जोश में खेल-खेल में अक्सर थार्नटन का हाथ अपने मुँह में ले लेता था और उस पर हल्के-से अपने दाँत गड़ा देता था। थार्नटन भी प्यार में अक्सर उसे थपथपाता रहता था।

रात को जब थार्नटन खेमे में सोता था तो भी कुत्ते उसके साथ सोते थे। बक को वह बिलकुल अपने पास सुलाता था। बक में एक अच्छे पालतू कुत्ते के सभी गुण थे, लेकिन जज साहब के घर से निकलने के बाद उसने जैसी जिन्दगी बिताई थी, उसके कारण अब उसमें जंगलीपन भी बहुत ज्यादा आ गया था। अक्सर वह चाँदनी रात में खेमे से बाहर निकल जाता था और खुशी के मारे खूब जोर-जोर से चिल्लाता था। अगर कभी कोई जंगली कुत्ता उसे दिखाई दे जाता था तो वह उसके पीछे पड़ जाता था और मीलों दूर तक उसका पीछा करते हुए भागता चला जाता था।

जंगल की खुली हवा में बक जैसे अपने को रोक नहीं पाता था। अब उसकी तन्दुरुस्ती भी बहुत अच्छी हो गई थी। हाथ-पैर की पेशियाँ उभर आई थीं और गला मोटा हो गया था। उसके चेहरे और शरीर पर घावों के निशान थे, जिनसे आसानी से पता लग सकता था कि अब तक वह कितनी बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ जीत चुका था।

इस तरह थार्नटन के साथ बक के दिन बड़े मजे से गुजर रहे थे। एक दिन नदी में लकड़ियों का काफी बड़ा बेड़ा तैयार हुआ दिखाई दिया। जब बेड़ा पास आया तो थार्नटन

किनारे पर जाकर खुशी से चिल्लाने लगा। बेड़े पर उसके दो साथी खड़े थे। बेड़े के किनारे लगते ही थार्नटन के दोनों साथी उछलकर किनारे आ गए और उन्होंने थार्नटन को गले से लगा लिया।

तीनों मित्र महीनों बाद मिले थे और बहुत खुश थे। बाद में जब थार्नटन के बक से उन लोगों का परिचय कराया तो उन्होंने प्यार और प्रशंशा के भाव से बक को थपथपाया और उसकी झबरी पीठ पर काफी देर तक हाथ फेरते रहे। कुछ दिनों के बाद बेड़े की लकड़ियाँ बेचकर सब लोगों ने वहाँ से डेरा उठाया और आगे बढ़े। चलते-चलते वे लोग एक छोटे नगर में पहुँचे। वहाँ वे लोग एक सराय में ठहरे। दूसरे दिन एक ऐसी घटना घटी, जिसने उस नगर में बक को बहुत प्रसिद्ध कर दिया।

हुआ यह कि सब लोग सराय के एक बड़े कमरे में बैठे थे कि अचानक एक शराबी आदमी किसी नौजवान से झगड़ पड़ा। थार्नटन को पता नहीं था कि वह शराबी उस नगर का मशहूर गुंडा था। थार्नटन अपनी आदत के अनुसार झगड़े में बीच-बचाव करने के लिए वहाँ पहुँच गया। गुंडे को यह अच्छा नहीं लगा। वह लड़ाई छोड़कर थार्नटन से उलझ पड़ा। गालियाँ बकते हुए उसने थार्नटन के कन्धे पर इतनी जोर से घूँसा मारा कि थार्नटन कलाबाजी खाता हुआ जमीन पर आ गिरा।

बक एक कोने में बैठा यह सब देख रहा था। थार्नटन के गिरते ही वह जोर से दाहड़ा और देखते-देखते उस गुंडे से लिपट गया। बक ने उछलकर उसका गला दबोचने की कोशिश की। गुंडा इतने तगड़े कुत्ते से खाली हाथ लड़ने के लिए तैयार नहीं था। वह घबरा उठा। इस बीच बक ने उसकी बाँह पर से काफी सारा मांस काट लिया और गले के पास भी काफी बड़ा घाव कर दिया।

थार्नटन ने किसी तरह आगे बढ़कर बक को रोका, वरना वह उस गुंडे की बोटी-बोटी नोंच डालता। गुंडा वहाँ से रोता-चिल्लाता भाग खड़ा हुआ। थोड़ी ही देर में पूरे नगर में इस घटना की खबर फैल गई। अब थार्नटन बक को लेकर जिधर भी निकल जाता, उधर ही लोग प्रसन्नता से उसकी ओर इशारे करने लगते थे।

इस घटना के कुछ ही दिनों बाद बक को थार्नटन की जान बचाने का एक और मौका मिला। थार्नटन अपने साथियों के साथ उस नगर के पास ही एक नदी में बहकर आई हुई लकड़ियों को इकट्ठा किया करता था। वहाँ नदी का बहाव बहुत तेज था। नदी में जगह-जगह नुकीली चट्टानें उभरी हुई थीं। थार्नटन के साथी किनारे पर एक चट्टान पर रस्सी थामे खड़े थे। और थार्नटन एक लम्बी-पतली नाव को लग्गी के सहारे धकेलता हुआ लट्ठों को इकट्ठा कर रहा था।

अचानक एक छोटी-सी चट्टान से टकराकर थार्नटन की नाव उलट गई और वह तेज धारा में जा गिरा। पानी इतना तेज था कि देखते-देखते थार्नटन काफी आगे निकल गया। कुछ आगे जाकर एक दूसरी चट्टान का सहारा लेकर बचने की कोशिश करने लगा।

उधर बक भी थार्नटन के गिरते ही पानी में कूद पड़ा और उसे बचाने के लिए आगे बढ़ने लगा। पानी इतना तेज था कि बक अपने को संभाल नहीं पा रहा था और बड़ी मुश्किल से

अपनी नाक पानी के ऊपर रखने की कोशिश कर रहा था। वह बार-बार थार्नटन की ओर बढ़ने के लिए हाथ-पैर फेंकता था, लेकिन उसके पास तक नहीं पहुँच पा रहा था। थार्नटन समझ गया कि इस तरह बक अपनी जान से हाथ धो बैठेगा। उसने चिल्लाकर बक को वापस किनारे पर जाने का हुक्म दिया। बक पहले तो नहीं माना लेकिन जब थार्नटन ने दोबारा उसे लौटने के लिए कहा तो मजबूर होकर वह पानी में डूबता-तैरता किनारे जा लगा।

थार्नटन के साथी पहले ही दौड़कर वहाँ पहुँच चुके थे। उन्होंने बक के शरीर पर से पानी पोंछा और उसे रगड़-रंगड़कर गर्मी पहुचाई। सब बक के हाथ-पैर में कुछ ताकत आई तो उन्होंने एक रस्सी उसकी गर्दन और कन्धों पर बाँधी और फिर से उसे पानी में उतार दिया। इस बार भी बक को थार्नटन के पास तक पहुँचने में बड़ी कठिनाई हुई। पानी का बहाव इतना तेज था कि अब थार्नटन के लिए भी ज्यादा देर तक पानी में उस चट्टान का सहारा लेना कठिन हो गया था। अगर बक को पहुँचने में थोड़ी देर हो जाती तो थार्नटन का हाथ चट्टान पर से फिसल जाता और फिर उसका पता लगाना भी मुश्किल हो जाता।



किसी तरह से बक उसके पास पहुँचा और उसने उछलकर रस्सी थाम ली। अब किनारे पर खड़े हुए लोग दोनों को खींचने लगे। किनारे तक पहुँचते-पहुँचते थार्नटन बहुत सारा पानी पी गया और लगभग अधमरा हो गया। बक का भी यही हाल था। जब उसे पानी से निकाला गया तब वह बेहोश हो चुका था। थार्नटन के साथियों ने उसे उल्टा लटकाकर उसके पेट से पानी निकाला। उधर बक के साथी कुत्तों ने चाट-चाटकर बक के बाल सुखाने की कोशिश

की। थोड़ी देर बाद बक को भी होश आ गया। इस घटना के बाद थार्नटन बक को और ज्यादा प्यार करने लगा।

उस साल जाड़े में बक ने डासन नगर में रक ऐसा काम किया, जिससे उसके मालिक को बहुत ज्यादा आमदनी हुई और उसका नाम भी सारे इलाके में मशहूर हो गया।

थार्नटन उस दिन आगे की यात्रा के लिए कुछ जरूरी सामान लाने बक के साथ बाजार गया था। बाजार में एक दुकान के पास कुछ लोग अपने-अपने कुत्तों की तारीफ के पुल बाँध रहे थे। लोग बक के बारे में भी सुन चुके थे। उनमें एक आदमी ने थार्नटन से कहा, "सुना है तुम्हारा कुत्ता बहादुर तो है ही, ताकतवर भी बहुत है। लेकिन मेरा कुत्ता इससे ज्यादा ताकतवर है क्योंकि मेरा कुत्ता पाँच सौ पौंड वजन से लदी और बर्फ में फँसी हुई गाड़ी को आसानी से खींच सकता है!"

थार्नटन को भी जोश आ गया। वह बोला, "बस। लेकिन मेरा बक तो एक हजार पौंड की गाड़ी को खींच सकता है।"

कहने को तो थार्नटन यह कह गया लेकिन बाद में वह बहुत घबराया, क्योंकि वह जानता था कि इस नगर के लोग अक्सर ज़रा-सी बात पर शर्त लगाने के लिए तैयार हो जाते थे, और हुआ भी यही। थोड़ी ही देर में वहाँ कुछ लोग जमा हो गए। उनमें से एक आदमी ने, जो उनका चौधरी मालूम होता था, आगे बढ़कर कहा, "तो आओ भाई, एक बाजी हो जाए! मेरी गाड़ी में इस समय ठीक एक हजार पौंड आटा लदा है। बीस-बीस पौंड के पचास थैले हैं।"

थार्नटन ने कोई जवाब नहीं दिया। वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या कहे। उसकी जेब में बाजी लगाने के लिए पूरे रुपए भी नहीं थे। वह सोच रहा था कि अगर बक गाड़ी को खींच नहीं सका और वह बाजी हार गया तो क्या होगा! परदेस में इतने रुपए वह कहाँ से लाकर देगा!

लेकिन तब तक वहाँ और लोग भी आ पहुँचे। उनमें से दो-चार थार्नटन को जानते थे। वे थार्नटन को उधार देने के लिए राजी हो गए। क्योंकि उन्हें उम्मीद थी कि बक जरूर इस बाजी को जीत लेगा। अगर वह जीत न सका तो—थार्नटन अवश्य कुछ दिनों में उनका रुपया उन्हें वापस कर देगा। उन्हें थार्नटन पर पूरा भरोसा था।

आसपास के चायखानों और दुकानों से उठ-उठकर लोग गाड़ी के आसपास जमा होने लगे। बर्फ की मोटी तह से ढकी हुई सड़क पर एक तरफ चौधरी की बर्फगाड़ी खड़ी हुई थी। लकड़ी की जिन पटरियों पर गाड़ी फिसलती थी, वे बर्फ में धँसी हुई थीं। थार्नटन ने अपने एक साथी से कहा, "मुझे तो बड़ा डर लग रहा है। गाड़ी पर एक हजार पौंड का वजन लदा है और गाड़ी बर्फ में धँसी पड़ी है। पूरी सड़क पर बर्फ बिछी हुई है। बक के लिए बड़ा मुश्किल होगा। गाड़ी की पटरियाँ बर्फ में जम गई हैं।"

उसके साथी ने बक को थपथपाते हुए कहा, "घबराओ नहीं। हमारा बक कोई मामूली कुत्ता थोड़े ही है। यह तो शेर है शेर! जरूर जीतेगा।"

हल्की-हल्की बर्फ अब भी लगातार गिर रही थी। आसपास खड़े हुए लोगों के कनटोप और रोयेंदार भारी कोट बर्फ से सफेद होते जा रहे थे। ठण्ड में ठिठुरते हुए लोग इस बात पर

बहस कर रहे थे कि इस होड़ में जीत किसकी होगी। कुछ लोगों ने चौधरी से कहा, “गाड़ी को पहले बर्फ से बाहर निकालकर सड़क पर खड़ी करो।”

लेकिन चौधरी राजी नहीं हो रहा था। वह कह रहा था, “मेरी शर्त में यह शरीक है कि कुत्ता इस गाड़ी को अकेले ही पहले बर्फ में से निकाले और फिर खींचते हुए आगे लकड़ी की उस टाल तक ले जाए।”

थार्नटन जानता था कि इस भारी गाड़ी को दस एस्किमो कुत्ते वहाँ लाए थे। वे कुत्ते कुछ ही दूर पर बँधे थे और वहाँ से भौंक रहे थे। देखने में सभी कुत्ते खासे मोटे-तगड़े नजर आ रहे थे। जिस काम को दस कुतों ने मिलकर किया था, उसको अब अकेले बक को करना है। थार्नटन ने आगे बढ़कर बक को गाड़ी में जोत दिया।

बक भी सारी स्थिति को समझ रहा था। वह शान से गर्दन उठाए हुए गाड़ी के सामने जा खड़ा हुआ। जब पट्टे और रस्सियाँ कसी जा रही थीं तब बक इस तरह से चंचल हो रहा था जैसे गाड़ी को खींचते हुए ले जाने के लिए उतावला हो रहा हो। आसपास खड़े लोग बक की सुन्दरता की प्रशंसा कर रहे थे और हिम्मत दिलाने की कोशिश कर रहे थे। कुछ लोगों ने पास आकर बक की पीठ में उँगलियाँ गड़ाकर उसकी उभरी हुई मांस-पेशियों को प्रशंसा के भाव से देखा। उनमें से एक ने कहा, “ऐसा खूबसूरत और ताकतवर कुत्ता मैंने आज तक नहीं देखा।”

अब तक थार्नटन बक के पास ही नीचे झुक गया। उसने बक का सिर अपने हाथों में ले लिया और गाल पर गाल टिका दिए। वह बक से इस तरह प्यार कर रहा था कि देखने वालों को लगा जैसे वह बक के कान में कोई बात कह रहा हो। आसपास खड़े हुए लोग उत्सुकता से देखने लगे। उनकी समझ में नहीं आया कि यह क्या हो रहा है। एक कुत्ते और मालिक का ऐसा प्रेम उन्होंने पहली बार देखा था। जब थार्नटन अलग होने लगा तो बक ने दस्ताने से ढंका उसका हाथ हल्के से अपने जबड़ों में पकड़ लिया और धीरे से उसे दाँतों में दबाया। वह जैसे थार्नटन के लिए बक का इशारा था कि तुम घबराओ मत। मैं तुम्हारे लिए पूरी कोशिश करूँगा। मैं तुमको प्यार करता हूँ।

“खींचो बक, खींचो।” थार्नटन ने हटकर जोर से कहा।

बक ने छाती फुलाकर अपनी रासें और पट्टियाँ कसीं और फिर थोड़ी देर के लिए उनको ढीला छोड़ दिया। दो-तीन बार उसने इस तरह जोर लगाने की कोशिश की।

“खींचों!” थार्नटन फिर जोर से चिल्लाया।

बक ने इस बार दाहिनी ओर झटका दिया और आगे की ओर पैर बढ़ाया। बोझ थोड़ा-सा हिला और गाड़ी के बेलनों के नीचे से टूटती जैसी आवाज निकली।

“हो!” थार्नटन फिर चिल्लाया।

बक ने इसी तरीके को दोहराया और बायीं ओर झटका दिया। बर्फ टूटने की आवाज चरमराहट में बदल गई। गाड़ी हिली और उसके बेलन कुछ सरके। गाड़ी बर्फ में से निकल आई थी। आसपास खड़े लोग अपनी साँस रोके इस दृश्य को देख रहे थे। जैसे ही गाड़ी बर्फ में से निकली, भीड़ में एक हल्का-सा शोर उठा। लेकिन बक ने उस ओर कोई ध्यान नहीं

दिया। वह अपने काम में जुटा रहा।

थार्नटन जोर-जोर से चीखे जा रहा था। बक ने इस बार पूरी ताकत लगाकर झटका दिया। उसकी चौड़ी छाती नीचे जमीन पर झुक आई और सिर आगे और नीचे हिचकोले लेने लगा। उसके पंजों से सख्त बर्फ पर गढ़े पड़ने लगे। गाड़ी एक बार सरकी तो फिर रुकी नहीं; धीरे-धीरे आगे बढ़ती गई। तीन मिनट बाद ही बक ने दौड़ना शुरू कर दिया। गाड़ी उसके पीछे फिसलती चली गई। अब तो मारे जोश और खुशी के लोग तालियाँ बजाने लगे और गाड़ी के साथ-साथ दौड़ने लगे।

देखते-देखते बक गाड़ी को सौ मीटर दूर लकड़ी की टाल के पास तक खींच ले गया। लोग खुशी से अपने कनटोप हवा में उछालने लगे। थार्नटन ने आगे बढ़कर बक को रोका और घुटनों के बल उसके पास बैठकर उसे अपनी गोद में भर लिया। वह पागलों की तरह बक को चूमने और थपथपाने लगा।

भीड़ के लोग भी पास खिसक आए। हर आदमी बक को छूने और थपथपाने की कोशिश करने लगा। जल्दी-जल्दी रस्सियाँ और पेटियाँ खोली गईं और बक को गाड़ी से आजाद कर दिया गया।

लोग थार्नटन को बधाइयाँ देने लगे। चौधरी ने आगे बढ़कर थार्नटन को गले लगा लिया और उसके हाथों में रुपयों की थैली रख दी। उसने बक को भी खूब प्यार किया। फिर बोला, “शाबाश थार्नटन। तुम्हारे कुत्ते ने तो आज कमाल कर दिया। इस नगर में आज तक ऐसी घटना नहीं घटी थी। मुझे सपने में भी उम्मीद नहीं थी कि इतनी भारी गाड़ी को कोई कुत्ता अकेले खींच भी सकता है। तुम्हारी जीत हुई। ये हजार रुपए लो। मैं आठ सौ रुपए तुम्हें और देने के लिए तैयार हूँ, तुम बक को मेरे हाथ बेच दो।”

थार्नटन की आँखों में खुशी के आँसू आ गए थे। उसने बक को अपने पैरों से सटाते हुए कहा, “नहीं, चौधरी साहब! इसे मैं बेच नहीं सकता, यह तो दुनिया में मेरा सबसे बड़ा दोस्त है।”

बक ने भी अपने दाँतों से थार्नटन का हाथ दबाते हुए उसके प्यार का जवाब दिया।

7



इस तरह बक ने थार्नटन के लिए पाँच मिनट में ही एक हजार रुपए कमा दिए। थार्नटन और उसके साथियों को इससे बड़ी मदद मिली। वे लोग घर से सोने की खोज में निकले थे और भटकते-भटकते यहाँ तक आ पहुँचे थे। उनके पास साधन बहुत थोड़े थे। अपना खर्च चलाने के लिए उन्हें रास्ते में मेहनत-मजदूरी करनी पड़ती थी। उन पर कुछ उधार भी चढ़ गया था। इस रुपए से उन्होंने लोगों का उधार चुकाया और आगे की अपनी यात्रा की तैयारी की।

अब वे लोग एक ऐसी भूली हुई सोने की घाटी में जाना चाहते थे जिसके बारे में लोगों ने सुना तो बहुत था, लेकिन अब तक कोई यहाँ पहुँच नहीं सका। जो लोग उसकी खोज में गए थे, उनमें से कोई भी वापस लौटकर नहीं आ सका। लेकिन उस भूली हुई खान के बारे में लोगों का पक्का विश्वास था कि उत्तरी ध्रुव के पास के बर्फीले इलाके में कहीं न कहीं ऐसी खान जरूर है, जहाँ से आसानी से सोना निकाला जा सकता है।

थार्नटन और उसके साथियों ने कुछ कुत्ते और बटोरे और अपनी बर्फगाड़ी को ठीक किया। फिर खाने-पीने का सामान इकट्ठा करके एक दिन सुबह ही वे लोग उस रहस्यमय खान की तलाश में पूर्व की ओर अनजान रास्ते पर बढ़ चले।

चार दिन में सत्तर मील की मात्रा करने के बाद वे एक बर्फीली नदी की घाटी में पहुँच गए। वहाँ कुछ समय तक उन्होंने डेरा डाला और थकान दूर की। बक के लिए यह यात्रा बड़ी मजे की थी। थार्नटन और उसके सभी साथी उसका बड़ा ख्याल रखते थे। साथ में जो कुत्ते थे वे सभी बक को अपना नेता मानते थे और हमेशा उसके पीछे चलते थे। जब कहीं ये लोग डेरा डालते थे तो कुत्तों के लिए ये दिन, दिन-भर इधर-उधर घूमने-घामने और खेलने-कूदने के होते थे।

थार्नटन और उसके साथी कभी-कभी मछली मारते थे और कभी बर्फीले इलाकों में रहने वाले जंगली खरगोशों का शिकार करते थे। इस तरह कुत्तों को भी शिकार मिलता था और ताजा खाना मिल जाता था। कभी रास्ते में कोई नदी पड़ती थी जो पूरी तरह बर्फ से जमी हुई नहीं होती थी। उसे पार करने के लिए थार्नटन को लकड़ी का बेड़ा बनाना पड़ता था। लकड़ियों को बटोरने में भी कुत्ते उसकी मदद करते थे।

इस तरह यात्रा करते-करते दिन बीतने लगे। महीने आए और निकल गए। अब वे लोग ऐसे अनजान इलाके में से गुजर रहे थे, जहाँ इस बात का कोई सबूत भी नहीं मिलता था कि

कोई आदमी इधर आया था। बर्फ का मौसम खत्म हुआ और फिर बसन्त आ गया। जंगली पेड़ों पर नए पत्ते निकलने लगे और झीलों, नदियों और झरनों की बर्फ गल गई।

चलते-चलते वे एक ऐसे जंगल के किनारे पहुँचे, जिसके अन्दर एक पुराना रास्ता-सा दिखाई दे रहा था। पता नहीं यह रास्ता कहाँ से शुरू होता था और कहाँ जाता था। लेकिन इसी रास्ते पर वे लोग आगे बढ़ चले। कुछ दूर चलने पर उन्हें लकड़ी के तख्तों से बनी एक टूटी-फूटी झोंपड़ी-सी मिली। इससे पता चलता था कि कुछ लोग कभी इधर आए थे और कुछ दिनों के लिए यहाँ ठहरे थे। फिर यहाँ से वे लोग कहाँ गए—बर्फ में गलकर मर गए या जंगली जानवरों और भेड़ियों ने उन्हें खा डाला, उसका किसी को भी कुछ पता नहीं था। आगे चलने पर उन्हें एक सड़े-गले कम्बल में लिपटी हुई एक पुरानी बन्दूक भी मिली। थार्नटन ने उसे उठाकर अपनी बर्फगाड़ी पर रख लिया।

जंगल में कई मील तक इधर-उधर भटकने के बाद वे एक खुली हुई चौड़ी घाटी में पहुँचे, जहाँ एक छोटी-सी नदी बहती थी। इस नदी की छिछली रेत में उन्होंने कुछ चमकते हुए कण देखे। जब उन्होंने एक तसले में नदी की तली में से थोड़ा-सा कीचड़ निकाला और उसे पानी में साफ किया तो उसमें सोना पीले मक्खन की तरह चमकने लगा।

अब उन्होंने आगे बढ़ने की जरूरत नहीं समझी और उसी नदी के किनारे डेरा डाल दिया। जंगल से लकड़ियाँ बटोरकर दो दिन में ही उन्होंने अपने लिए एक छोटी-सी झोंपड़ी तैयार कर ली और उसके आसपास लकड़ी के तख्तों और पत्थरों का एक घेरा भी बना लिया। कुछ लकड़ी उन्होंने ईंधन की तरह जलाने के लिए भी जमा कर लीं। अब थार्नटन और उसके दोनों साथी दिन-भर नदी की तली में से सोना निकालते थे और उसे साफ करके हिरण की खाल के थैलों में जमा करते जाते थे। धीरे-धीरे उन्होंने कई थैले सोने की रेत से भर लिए। वे सब मेहनत करते थे और अपना खजाना बढ़ाते जा रहे थे।

और सब कुत्तों के पास थार्नटन और उसके साथियों के द्वारा जब-तब मारे गए शिकार को खींच लाने के सिवाय और कोई काम नहीं था। बक दिन-भर अपने साथी कुत्तों के साथ इधर-उधर जंगल में चौकड़ियाँ भरा करता था, या फिर आग के पास घण्टों लेटा कुछ सोचता रहता था।

कई बार बक एक सपना देखता था और नींद से चौंककर जाग उठता था। उसे दिखाई देता था कि बहुत बड़ा जंगली इलाका है और उसमें वह एक जंगली आदमी के साथ रहता है। यह जंगली आदमी आदिम मानव था और जंगली जानवरों की खाल पहनता था। बक सपने में देखता था कि वह इस जंगली आदमी के साथ जंगल के खूँखार जानवरों का शिकार करता है और उन्हें अपने दाँत और पंजों से फाड़कर मार डालता है। जब बक ऐसे किसी सपने से चौंककर जागता था तो उसका मन होता था कि वह किसी हिरण या भेड़िए का इसी तरह शिकार करे और उसे बिना किसी की मदद के अकेले ही मारकर गिरा दे। उसे इतना जोश आता था कि वह तुरन्त उठकर खड़ा हो जाता था और खूब जोर-जोर से भौंकता हुआ जंगल में दूर तक भागा चला जाता था। इस तरह अनजाने ही बक के स्वभाव में जंगलीपन बढ़ता जा रहा था।



एक रात वह सोते-सोते चौंककर उठा। उसकी आँखें कुछ ढूँढ़ रही थीं। नथुने काँप रहे थे और कुछ सूँघ रहे थे। उसकी गर्दन के बाल हवा में लहरा रहे थे। खेमे में सभी लोग चुपचाप सोए हुए थे। बाहर चाँदनी छिटकी हुई थी। अचानक बक को जंगल से दूर कहीं किसी भेड़िए के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। वह फौरन उसी ओर लपका। रात के सन्नाटे को चीरता हुआ वह जंगल में काफी आगे निकल गया।

जब भेड़िए की आवाज पास आने लगी तो उसने अपनी चाल धीमी कर ली। अब वह बहुत सावधानी से चुपचाप चल रहा था और पेड़ों की छाया के नीचे छिपता हुआ चौकन्नी नजरों से इधर-उधर देखता जा रहा था। अन्त में पेड़ों के बीच एक खुली जगह वह पहुँचा तो उसने देखा कि एक लम्बा-पतला जंगली भेड़िया अपनी नाक को आकाश की ओर ताने, अपने पिछले पैरों पर सीधा खड़ा होकर चीख रहा था।

बक ने कोई शोर नहीं मचाया। लेकिन पता नहीं कैसे भेड़िए को उसकी मौजूदगी का पता लग गया और उसने चीखना बन्द कर दिया। बक चुपचाप निकलकर खुले में आ गया। उसकी पूँछ सीधी खड़ी हो गई और पैर बहुत सतर्कता से पड़ने लगे। बक उस भेड़िए पर अचानक हमला करना चाहता था, लेकिन साथ ही न मालूम क्यों उसको मारने की बजाय उससे दोस्ती करने का उसका मन हो रहा था। लेकिन भेड़िया उसे देखते ही भाग खड़ा हुआ।

बक ने उसका पीछा किया और उसे पकड़ने की धुन में लम्बी-लम्बी छलाँगें लगाने लगा। बक अब चालाकी से उसे घेरने की कोशिश कर रहा था। खदेड़ते-खदेड़ते वह भेड़िए को एक ऐसे रास्ते पर ले गया जो आगे जाकर बन्द हो जाता था, क्योंकि वहाँ पेड़ों का एक घना

झुरमुट था। भेड़ियां चारों ओर चक्कर लगाने लगा। वह बराबर बक की पकड़ से दूर रह रहा था। बक कभी जोर-जोर से भौंककर उसे डराता था और कभी छलांग लगाकर उसके पास पहुँचने की कोशिश कर रहा था। भेड़िया भी ऐसे मौके पर गुर्राने लगता था और अपने दाँत पीसने लगता था।

बक को इस खेल में मजा आने लगा। वह बार-बार भेड़िए को दौड़ाता था और फिर एक जगह खड़ा होकर उसे घूरने लगता। भेड़िया खूब लम्बा-चौड़ा था। बक का सिर कठिनाई से उसके कन्धे तक पहुँचता था। लेकिन भेड़िया कई दिनों का भूखा और सूखा हुआ नजर आता था, जबकि बक उससे ज्यादा मोटा-ताजा और भारी मालूम होता था।

मौका देखकर बक फिर उसकी ओर झपटा और उसके बहुत पास आ पहुँचा। भेड़िया पहले तो बहुत डरा लेकिन फिर उसने समझ लिया कि बक उसका कोई नुकसान करना नहीं चाहता। अब दोनों एक-दूसरे को घूरते हुए पास आने लगे और थोड़ी ही देर में नाक से नाक मिलाकर एक-दूसरे को सूँघने लगे। इस तरह अन्त में वे दोनों मित्र बन गए और आपस में खेलने लगे।

कुछ देर बाद भेड़िया हल्की छलाँग लगाता हुआ एक ओर चल दिया। ऐसा लगता था कि वह कहीं जा रहा है। बक भी उसका संकेत समझ गया और उसके पीछे हो लिया। दोनों दौड़ते-दौड़ते एक छोटी-सी नदी की संकरी घाटी में उस जगह पहुँच गए जहाँ से वह नदी निकलती थी। नदी के निकलने की जगह को पार करके वे लोग दूसरी तरफ पहुँच गए और एक-दूसरे का पीछा करते हुए काफी आगे निकल गए।

धीरे-धीरे सवेरा हो गया और बक भेड़िए के साथ खेलता-कूदता रहा। जब सूरज खूब ऊँचा उठ आया तो वे लोग पानी पीने के लिए एक सोते के पास रुके, रुकते ही बक को थार्नटन की याद आई। वह बैठ गया। भेड़िया कुछ दूर तक आगे दौड़ता गया। फिर उसके पास वापस लौट आया। उसने नाक मिलाई और कुछ ऐसी हरकत की, जिसका मतलब था कि वह उसे और आगे अपने साथ ले जाना चाहता था।

लेकिन अब बक राजी नहीं हुआ। वह वापस लौट चला। इतना दूर निकल आने पर भी बक रास्ता नहीं भूला और कुछ देर तक लगातार दौड़ने के बाद अपने डेरे पर लौट आया। उस समय डेरे में थार्नटन दोपहर का खाना खा रहा था। बक दौड़ता हुआ जाकर उससे लिपट गया। थार्नटन भी उसे प्यार से थपथपाने लगा और बोला, “कहाँ चला गया था रे? अब तू घंटों गायब रहता है! बिलकुल जंगली होता जा रहा है!”

बक प्यार से उसके पास खिसककर बैठ गया और खाना खाने लगा।



इसके बाद बक ने दो दिन और दो रात अपने खेमे को नहीं छोड़ा। वह बराबर थार्नटन के आसपास ही रहता था। उसके पीछे-पीछे वह काम की जगह तक जाता था। उसे खाना खाते हुए देखता था और रात में उसके पास सो जाता था। जंगल से अब भी भेड़िए की पुकार आती थी। लेकिन बक उसकी ओर ध्यान नहीं देता था। अन्त में एक रात को उससे नहीं रहा गया और वह फिर अपने उसी जंगली दोस्त से मिलने के लिए जंगल की ओर भाग निकला। उसने भेड़िए को वहाँ बहुत खोजा, लेकिन वह उसे नहीं मिला। वह दु:खी होकर लौट आया।

लेकिन अब बक रात में खेमे से बाहर ही सोने लगा। कभी-कभी वह पूरे-पूरे दिन खेमे से बाहर भागा रहता। एक बार उसने उसी छोटी नदी के निकलने के स्थान को पार किया और दूसरी ओर के जंगल में उतर गया। वहाँ भी लगभग एक सप्ताह तक घूमता रहा। वह बराबर अपने उस जंगली दोस्त की खोज में रहा, लेकिन फिर कभी उससे मुलाकात नहीं हुई। इस बीच में वह चलते-चलते ही शिकार मार लेता था और आराम करके छलाँग मारता हुआ आगे बढ़ जाता था। धीरे-धीरे वह जंगल के किनारे तक जा पहुँचा। वहाँ उसने एक चौड़ी नदी के मुहाने पर सामन मछली का शिकार किया।

एक दिन इसी नदी के किनारे उसने एक बड़े भारी काले भालू को मारा। इस भालू से बक को बड़ी सख्त टक्कर लेनी पड़ी। लेकिन अन्त में जीत बक की हुई। भालू की लाश को वहाँ छिपाकर बक आगे बढ़ गया। अब खून की प्यास उसमें पहले से बहुत तेज हो गई थी। अब वह एक हिंसक और शिकारी जानवर बन गया। जंगली जानवरों को दौड़ाकर मारने में उसे मजा आता था। अकेले ही वह किसी जानवर से भिड़ जाता था और जब तक उसकी जान नहीं लेता था तब तक उसका पीछा नहीं छोड़ता था।

इन सात दिनों में वह और तगड़ा हो गया था। अब वह देखने में किसी मामूली कुत्ते जैसा नहीं लगता था। दूर से उसे कोई देखता तो एक मोटा-ताजा भेड़िया ही समझता था। हालाँकि कद में शरीर की बनावट में वह भेड़िए जैसा नहीं था। लेकिन उसकी चालाकी भेड़िए जैसी ही थी। अब वह मामूली कुत्तों से ज्यादा तेज रफ्तार से दौड़ता था और निडर होकर किसी भी जानवर से भिड़ जाता था। जंगल के जानवर उसे देख कर भाग निकलते थे।

जब वह सात दिन बाद इधर-उधर घूमता-घामता डेरे पर वापस लौटा तो थार्नटन भी उसे देखता ही रह गया। दोनों फिर बड़े प्यार से मिले। थार्नटन ने प्यार से उसे घूँसा जमाते हुए कहा, "अब तुम बिलकुल आवारा हो गए हो! लगता है, तुम अब इसी जंगल में रहना चाहते हो।" फिर उसने अपने एक साथी से कहा, "देखो, क्या तुम्हें यह कुत्ते जैसा दिखाई देता है? ऐसा कुत्ता तो तुमने कभी देखा नहीं होगा।"

उसका साथी बक की तारीफ करते हुए बोला, "हाँ, बड़ा लाजवाब कुत्ता है! जंगल में ऐसे घूमता है, जैसे जंगल का बादशाह हो। हमारे कुत्ते तो अब इसे देखकर मारे डर के काँपने लगते हैं।

बक जब तक डेरे पर रहता था तब तक तो कुछ ढंग से रहता था लेकिन जैसे ही जंगल में पहुँचता था, तो बड़ा खूँखार और जंगली बन जाता था।

फिर मौसम बदला और हिरण काफी संख्या में दिखाई देने लगे। वे निचली घाटियों में

जाड़ा बिताने के लिए धीरे-धीरे चले जा रहे थे। बक पहले ही एक राह-भूले छोटे हिरण को मार चुका था। लेकिन अब वह एक अधिक बड़े और मजबूत हिरण का शिकार करना चाहता था। एक दिन जंगल में उसे नाले के मुहाने के पास ऐसा ही एक शिकार मिल गया।

लगभग बीस हिरणों का एक झुंड नदी-नालों और जंगल को पार करके इस ओर आ निकला था। उनका नेता एक बहुत बड़ा लम्बा-चौड़ा हिरण था। उसके बड़े-बड़े सींग हथेली की तरह फैले हुए थे। बक को देखते ही वह जोर से दहाड़ा और उसकी बड़ी-बड़ी आँखें गुस्से से लाल हो गईं। बक ने भी सीधे उस पर हमला बोल दिया। पास जाने पर उसने देखा कि उस हिरण की पीठ में परों वाला एक तीर घुसा हुआ था। यह शायद किसी आदिवासी शिकारी का तीर था। इसीलिए हिरण बहुत ज्यादा गुस्से में था।

जब बक ने उस हिरण को उसके झुण्ड से अलग करने की कोशिश की तो वह चिढ़ उठा और बक की तरफ लपका। बक भौंकता और उछलता हुआ एक तरफ हट गया और हिरण एक पेड़ से जाकर टकराया। अब तो उसके क्रोध की सीमा नहीं थी। वह अपने भयानक चपटे खुरों से बक को कुचल देने के लिए उछल कर आगे बढ़ा। अब दोनों में जमकर लड़ाई शुरू हो गई। बीच-बीच में हिरण के दो-तीन छोटे साथी पीछे से बक पर हमला करते थे। लेकिन बक इस तरह आसानी से घिर नहीं सकता था। वह पैंतरा बदलकर घेरे से बाहर निकल जाता था और घायल हिरण को फिर से चिढ़ाने लगता था। बक ने अब एक साथ हिरणों के उस पूरे झुण्ड पर हमला शुरू किया। वह भौंक-भौंककर हिरणों को खदेड़ने लगा। छोटे हिरण तो पहले ही भाग निकले। हिरणियाँ भी डरकर अपने बच्चों के साथ इधर-उधर भागने लगीं।

जब घायल हिरण अपने दल के साथ भागने की कोशिश करता था तो बक उछलकर उसका रास्ता काट देता था और उसे झुण्ड से अलग कर लेता था। इस तरह वह दिन-भर हिरणों के पीछे लगा रहा। उसने घायल हिरण को तो एक क्षण को भी चैन नहीं लेने दिया।

धीरे-धीरे हिरणों का धीरज खत्म होता जा रहा था। जैसे-जैसे दिन घटता गया और सूरज डूबने की तैयारी करने लगा, हिरणों का वह नेता वहाँ से भाग निकलने के लिए बेचैन होने लगा। जो छोटे हिरण अपने घायल नेता की सहायता कर रहे थे, वे भी अब झुण्ड के दूसरे हिरणों के साथ वहाँ से भाग निकलने की कोशिश में थे। अन्त में उन्होंने उस घायल हिरण को अकेला छोड़ दिया। अँधेरा होते-होते दूसरे सभी हिरण वहाँ से भाग गए, और बक बूढ़े हिरण का बराबर रास्ता रोके रहा।

इसके बाद उस रात-भर और दूसरे दिन भी बक ने अपने शिकार को एक पल के लिए भी नहीं छोड़ा और न उसे आराम ही करने दिया। जब हिरण पेड़ों की पत्तियाँ या बेंत की टहनियों को कुरतने की कोशिश करता तो बक फिर उस पर हमला कर देता, और उसे वहाँ से हटा देता। यहाँ तक कि उसने उसे पानी भी नहीं पीने दिया। ऐसे मौकों पर हिरण निराश होकर बहुत दूर तक तेज भाग निकलता था। बक उसे रोकने की कोशिश नहीं करता था और आराम से उसके पीछे छलाँग लगाता रहता था। उसे पता था कि अब कुछ ही देर में इसकी हिम्मत टूट जाएगी और फिर मैं आराम से उसे मार सकूँगा।

हुआ भी यही। भूख-प्यास और थकान से परेशान होकर हिरण अब तेजी से दौड़ भी नहीं सकता था। वह काफी देर तक एक ही जगह खड़ा बक को घूरता रहता था और अपने खुरों से जमीन खोदता रहता था। ऐसे मौके पर बक कभी छोटा-मोटा शिकार करके खा लेता था यह नाले में पानी पी लेता था और फिर तरोताजा होकर हिरण के पीछे लग जाता था। अन्त में चौथे दिन की शाम को बक ने हिरण को मार डाला।

उसने एक दिन और एक रात अपने शिकार के पास बिताए। बारी-बारी से उसे खाता रहा और सोता रहा। फिर आराम करने के बाद उसने अपने खेमे की सुध ली। थार्नटन की याद आते ही वह तुरन्त वापस लौट पड़ा और लम्बी-लम्बी छलाँगें लगाता हुआ खेमे की ओर बढ़ने लगा। वह कई घंटों तक लगातार दौड़ता रहा। इस अनजान इलाके के सभी रास्तों से वह परिचित हो चुका था। बहुत ही समय के बाद वह खेमे के पास पहुँचने लगा।

जैसे-जैसे बक खेमे के पास पहुँच रहा था, उसे वहाँ बहुत गड़बड़ी का अन्दाजा लग रहा था। वह थोड़ी-थोड़ी देर में रुककर कुछ सूँघता था और फिर जोर से छलाँग लगाता हुआ खेमे की ओर भागता था। खेमे से लगभग तीन-मील दूर उसे एक खास तरह की गन्ध आई और कदमों के कुछ ताजे निशान भी दिखाई देने लगे। उसकी गर्दन के बाल काँपकर सीधे खड़े हो गए। ये निशान सीधे खेमे की ओर और थार्नटन की ओर जा रहे थे।

बक तेजी से लेकिन दबे पैर बढ़ता चला। अब उसे विश्वास होता जा रहा था कि खेमे में कोई भयानक दुर्घटना घटी है। कुछ आगे जाने पर अचानक वह रुक गया और फिर पीछे लौटकर सूँघने लगा। सूँघते-सूँघते वह बाईं ओर एक झाड़ी के पास पहुँचा। वहाँ उसे अपने दल का एक कुत्ता पड़ा हुआ मिला। कुत्ते के शरीर में एक तीर आरपार घुसा हुआ था। यह तीर देखने में किसी आदिवासी का मालूम होता था, क्योंकि उसके एक सिरे पर कुछ पंख बँधे थे।

कुछ और आगे जाने पर बक को एक दूसरा कुत्ता मिला, जिसे थार्नटन ने आखिरी यात्रा के प्रारम्भ में खरीदा था। उसके शरीर में कई तीर घुसे थे और वह अब भी छटपटा रहा था। बक यह सब देखकर बहुत चिंतित हुआ। वह उस कुत्ते को देखने के लिए रुका भी नहीं। उसके पास से होते हुए वह बहुत सावधानी से खेमे की ओर बढ़ने लगा।

खेमे की ओर से कुछ लोगों के गाने की आवाज आ रही थी। इस तरह का गाना बक ने पहले कभी नहीं सुना था। बक समझ गया कि खेमे में कुछ अनजान लोग आ घुसे हैं। वह पैर दबाकर झाड़ियों के पीछे छिपता हुआ आगे बढ़ने लगा। एक झाड़ी के पास उसे थार्नटन का एक साथी मुँह के बल पड़ा मिला। उसके शरीर में कई तीर घुसे हुए थे।

अब तो बक लपकता हुआ खेमे की ओर बढ़ा। खेमे के घेरे के तख्ते के पीछे से उसने जो दृथ्य देखा, वह और भी चौंकाने वाला था। उसने देखा कि कुछ आदिवासी लोग बीच में आग जलाकर उसके आसपास जंगलियों की तरह नाच रहे हैं। उनकी वेशभूषा भी बड़ी विचित्र थी। उन्होंने जानवरों की खालों के कपड़े पहन रखे थे और लम्बे-लम्बे पंख अपने बालों में खोंस रखे थे। ये अमेरिका के उत्तरी इलाके में रहने वाले यीहृत जाति के आदिवासी थे।

बक मारे क्रोध के पागल हो गया। अब उसने ज्यादा सोच-विचार की जरूरत नहीं

समझी। बहुत जोर से गुर्राता हुआ वह घेरा पार करके खेमे के अन्दर घुस गया। आदिवासी भेड़िए के आकार के एक बड़े भारी कुत्ते को अपनी ओर झपटते हुए देखकर घबरा उठे। उनमें भगदड़ मच गई।

वे लोग अपने हथियार संभालें, इसके पहले ही बक ने उनमें से एक को धर दबोचा और उसका चेहरा नोंच लिया। फिर देखते-देखते उसने अपने दाँत उसके गले में गड़ा दिए। आदिवासी बहुत जोर से चिल्लाया और जमीन पर आ गिरा। वह उन लोगों का नेता था। बक ने उसको वहीं छोड़कर दौड़कर दूसरे आदमी का पीछा किया और उसकी पिंडलियाँ चबा डालीं। जब तक दूसरे आदिवासियों ने अपने-अपने भाले और तीर-कमान संभाले, तब तक बक चार आदमियों को जमीन पर लिटा चुका था। आदिवासी इतने डरे हुए थे और घबराहट में इस तरह से भाग-दौड़ रहे थे कि जब उन्होंने बक पर हमला किया तो उनके हथियार आपस में ही एक-दूसरे को घायल करने लगे। जब एक आदिवासी ने बक का निशाना ताक करके अपना भाला फेंका तो बक उछलकर दूसरी ओर निकल गया। भाला सीधा एक आदिवासी की छाती में घुस गया। इस तरह उनके तीर भी बक को न लगकर या तो इधर-उधर जा गिरते थे या अपने ही किसी साथी को लग जाते थे। देखते-देखते सभी आदिवासी वहाँ से भाग खड़े हुए। कोई जंगल की ओर भागा और कोई नदी की ओर। बक ने भी उनका पीछा नहीं छोड़ा। दो-तीन आदिवासियों को तो वह कई मील दूर तक खदेड़ आया।



जब बक थककर वापस डेरे पर लौटा तो सबसे पहले वह इधर-उधर सूँघता हुआ थार्नटन को खोजने लगा। सूँघते-सूँघते वह नदी के उस किनारे पर पहुँच गया, जहाँ नदी के घिरे हुए पानी से एक छोटा-सा गहरा तालाब बन गया था। इसी तालाब के किनारे बक को एक और कुत्ता पड़ा मिला। उसका आधा शरीर पानी में था और आधा किनारे पर। बक ने पास जाकर पानी में झाँककर देखा तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। पानी में थार्नटन औंधे मुँह पड़ा हुआ था।

बक को यह समझते देर नहीं लगी कि थार्नटन मर चुका है। वह थककर और दुखी होकर वहीं तालाब के किनारे बैठ गया। घंटों वह इसी तरह बैठा रहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अब वह क्या करे? आदिवासियों से बदला लेने के लिए उसका मन तड़प रहा था। थोड़ी देर बाद वह उठा और वापस खेमे के पास पहुँचा।

आदिवासियों ने खेमे का सारा सामान लूट लिया था और सभी चीजों को तोड़-फोड़

दिया था। खाने-पीने का सामान भी इधर-उधर बिखर चुका था। बक ने एक-एक चीज को सूँघा और उसे उसी तरह छोड़ दिया। वह बहुत दुखी स्वर में काफी देर तक चिल्लाता रहा और फिर आखिरी बार खेमे को छोड़कर वापस तालाब के किनारे आ बैठा। जब रात हो गई, और आकाश में पूरा चाँद निकल आया तो बक को अपना अकेलापन सताने लगा। उसके सभी साथी मारे जा चुके थे और अब वह बिलकुल अकेला रह गया था।

जब रात काफी गुजर गई तो अचानक भेड़ियों के एक बड़े भारी झुँड ने न मालूम कहाँ से उस घाटी पर धावा बोल दिया। बक उनका मुकाबला करने के लिए एक खुली जगह में आकर खड़ा हो गया। उसे अब किसी तरह का डर नहीं था। इस समय वह जी भरकर लड़ने के लिए बेचैन हो रहा था।

भेड़ियों का दल धीरे-धीरे एक घेरा बनाकर उसकी ओर बढ़ने लगा। लेकिन वह चाँदनी रात में पत्थर की एक सफेद मूर्ति की तरह चुपचाप खड़ा रहा। एक क्षण के लिए तो सब कुछ जैसे खामोश रहा। फिर अचानक एक मजबूत भेड़िया सीधा बक की ओर झपटा। बक ने बिजली की तेजी से आगे बढ़कर उसकी गर्दन तोड़ दी और फिर वह पहले की तरह ही बिना हिले-डुले अपनी जगह पर सीधा खड़ा हुआ। घायल भेड़िया उसके पीछे तड़पता रहा। दूसरे भेड़िए यह दृश्य देखकर सन्नाटे में आ गए। वे घेरा बाँधे खड़े रहे। आगे बढ़ने की उनकी हिम्मत नहीं दी थी।

काफी देर बाद दो-तीन और भेड़िए आगे बढ़े। लेकिन बक ने उन्हें भी वही सजा दी। उनमें से दो घायल होकर वहीं गिर पड़े और एक लहू-लुहान होकर वहाँ से भाग खड़ा हुआ। उसको भागते देख दूसरे भेड़िए भी उसके पीछे-पीछे दौड़ पड़े। लेकिन अब बक उनको छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। वह दहाड़ता हुआ उनके पीछे लग गया। भेड़िए घबराहट में बहुत तेजी से भाग रहे थे लेकिन बक छलाँग लगाते हुए उनसे आगे निकल गया और आगे बढ़कर उसने उनके दल को रोक दिया। अब सभी भेड़िए झुँड बाँधकर एक-दूसरे से सटकर खड़े हो गए। कोई भी वहाँ से भागने की हिम्मत नहीं कर सका।

बक धीरे-धीरे गुर्राता हुआ उनके झुण्ड की ओर बढ़ा। अब वह उन पर हमला करने की बजाय उनके बीच अपने किसी पुराने साथी को खोजने लगा। अचानक एक लम्बा और दुबला-पतला भेड़िया आगे बढ़ा। उसने बक को पहचान लिया और हल्के-से कू-कू करते हुए वह बक के पास आ खड़ा हुआ। बक ने भी उसे पहचान लिया। फिर एक दूसरा बूढ़ा भेड़िया हिम्मत करके बक के पास आ खड़ा हुआ। धीरे-धीरे सभी भेड़िए बक को घेरकर इस तरह खड़े हो गए, जैसे उन्होंने बक को अपना नेता मान लिया हो।

थोड़ी ही देर में बक अपने साथियों के साथ उस घाटी में इधर-उधर छलाँगें लगाता हुआ खेलने लगा, कभी वह सबके बीच खड़ा होकर आसमान की ओर मुँह उठाकर जोर-जोर से भौंकता था तो दूसरे भेड़िए भी उसके साथ भौंकने लगते थे और फिर जब वह छलाँग लगाते हुए किसी पहाड़ी की ओर दौड़ता था तो वे भेड़िए झुण्ड बाँधकर उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगते थे।

इस तरह बक को जंगल के नए साथी मिल गए। वह उनका एकमात्र नेता था। अब इस

पूरी घाटी पर बक का राज था।

यीह्त आदिवासियों ने भी उस दिन के बाद उस घाटी में कभी पैर नहीं रखा। जंगल के उस पार उनकी बस्ती थी। इस बस्ती पर भी कभी-कभी बक अपने साथियों के साथ हमला कर देता था। उस समय आदिवासियों ने वहाँ से अपने डेरे उठा लिए।



धीरे-धीरे यह बात प्रसद्धि हो गई कि सोने की नदी वाली घाटी में एक बहुत बड़े और अजीब-से भेड़िए का राज है, जो देखने में न तो भेड़िया है और न कुत्ता ही। इस तरह वर्षों उस रहस्यमय घाटी पर बक का राज रहा।

सोने की घाटी की खोज में निकलने वाले यात्री पहले ही उधर बहुत कम आते थे और अब तो वे उस घाटी का नाम सुनते ही मारे डर के काँपने लगते थे। लोग अक्सर उस भयानक भेड़िए की कहानी कहा करते थे, लेकिन उन्हें यह पता नहीं था कि यह भेड़िया असल में बक नाम का कुत्ता ही था जो कभी जज साहब के बच्चों के साथ खेला करता था।

□□□

किशोरों के लिए उपन्यास

गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels) (पुरस्कृत)
रॉबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe) (पुरस्कृत)
ख़ज़ाने की खोज में (Treasure Island) (पुरस्कृत)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio) (पुरस्कृत)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी तावीज़ (Talisman)
तीसमार ख़ां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
क़ैदी की करामात (Count of Monte Christo)
डेविड कॉपरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ़ की रानी (Anderson's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimm's Fairy Tales)
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindbad)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबी डिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)
काला घोड़ा (Black Beauty)
अद्भुत द्वीप (Swiss Family Robinson)
काला फूल (Black Tulip)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्राएं (20,000 Leagues Under the Sea)

शिक्षा भारती

जंगल की कहानी

CALL OF THE WILD